सफलता की कहानियां

जिला कांगड़ा-हिमाचल प्रदेश

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

हिमाचल सरकार

मार्गदर्शन

राकेश कंवर (भा.प्र.से.)
राज्य परियोजना निदेशक एवं कृषि सचिव

संकलन एवं संपादन

प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

रमन कान्त
उप-संपादक

तकनीकी सहयोग

डॉ० मनोज गुप्ता
प्रधान वैज्ञानिक, कृषि अर्थशास्त्र

इकबाल ठाकुर
मीडिया सलाहकार

डॉ० मोहिन्दर सिंह भवानी
उप-निदेशक, कृषि

हिमाचल प्रदेश सरकार

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हमारे राज्य को 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहां का किसान–बागवान मेहनतकश, ईमानदार तथा नई तकनीक की स्वीकार्यता हेतु हमेशा तत्पर रहता है। प्रदेश के इन्हीं किसान–बागवानों के कारण आज हमें देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है। मौसमी–बेमौसमी सब्जी उत्पादन में भी 8,000 करोड़ से अधिक की आय प्रदेश आज अर्जित कर रहा है। लेकिन इस बढ़ती खुशहाली में किसान का खेत से प्रवासन, कीटनाशकों एवं अन्य खेती रसायनों का बढ़ता एवं अंधाधुंध प्रयोग, बढ़ती कृषि–बागवानी लागत और भोजन व फल–सब्जी में पाए जाने वाले इन रसायनों के अंश प्रदेश के सामने एक चुनौती भी पेश कर रहे हैं। साथ ही 2022 तक किसान–बागवान की आय दोगुनी करने का मा० प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना भी हमें पूरा करना है। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के शुभारम्भ से हमारी सरकार ने यह पहल आरम्भ कर दी है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से बड़ी तीव्र गति से खेती संरक्षण एवं किसान आय वृद्धि हेतु एक व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। कांगड़ा जिला में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की सफलता की कहानियों का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे पूर्ण आशा है कि परियोजना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में यह सफल किसान अपने–2 गांव तथा पंचायत में 'प्राकृतिक खेती' के इस अभियान को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। जिला कांगड़ा में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' अभियान से जुड़े कृषि अधिकारियों और किसानों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

–जयराम ठाकुर

कृषि, पशुपालन, मत्स्य, ग्रामीण
विकास एवं पंचायती राज मंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हिमाचल प्रदेश सरकार की अति महत्वाकांक्षी योजना 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' के अंर्तगत जिस तरह से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को अपनाने हेतु किसान–बागवान रूचि दिखा रहे हैं, यह निश्चय ही प्रदेश के लिए बहुत उत्साहवर्धक है। पिछले 4 वर्षों में लगभग 1,74,394 किसान–बागवानों का 3,590 पंचायतों में प्राकृतिक खेती से जुड़ना यह आभास दिलाता है कि प्रदेश के सभी कृषि–भौगोलिक क्षेत्रों में, हर फसल तथा फलों पर किसान–बागवानों ने इस पद्धति को अपनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार कर लिया है।

इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई'(SPIU) द्वारा विभिन्न फसलों तथा फलों के उत्पादन, कीट–बीमारी प्रबंधन तथा किसान आय वृद्धि इत्यादि मानकों पर एकत्र किए आंकड़े निश्चित रूप से इस योजना की अपार सफलता को बयान कर रहे हैं। प्रदेश में किसानों का खेती खर्च घटाने, बिना कृषि रसायनों के फसल उत्पादन कर किसान आय दोगुनी करने तथा प्रदेश के जल–जमीन एवं पर्यावरण को समृद्ध बनाने हेतु इस योजना का कार्यान्वयन एक सुखद तथा अनुकरणीय प्रयास है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़े सफल किसानों के अनुभव, उनके खर्चे में आई कमी तथा आय में वृद्धि जैसे मुख्य बिंदुओं का संकलन एवं प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। नए किसान–बागवानों की जागरूकता एवं शिक्षण हेतु ऐसे संकलन एक प्रेरणा का काम करेंगे। मेरी इन सभी किसान–बागवानों को शुभकामनाएं तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) को उनके विविध एवं सफल प्रयासों हेतु बधाई।

–वीरेन्द्र कंवर

राज्य परियोजना निदेशक
एवं कृषि सचिव
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

देशभर में कृषि क्षेत्र में आई हरित क्रान्ति के दुष्प्रभाव आज समाज और जीवन पर पड़ते स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं। भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास, किसानों की बढ़ती खेती लागत, घटता या स्थिर होता उत्पादन तथा अन्ततोगत्वा किसान का खेती–बागवानी से हटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन चिन्ता का विषय बन गया है। हमारा राज्य हिमाचल प्रदेश भी इन दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। रसायनिक खेती के इन प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों के निदान हेतु 'जैविक खेती' का विकल्प भी सार्थक सिद्ध नहीं हुआ। 'जैविक खेती' का आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव इस विधि को अधिक खर्चीला बना रहा है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अन्तर्गत पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित खेती विधि क्रियान्वयन द्वारा पिछले 4 वर्ष के छोटे से अन्तराल में 1,71,063 से अधिक किसान–बागवानों ने अपने–2 खेत–बागीचों में इस खेती विधि के मॉडल खड़े कर लिए हैं। यह हिमाचल प्रदेश की खेती को रसायनमुक्त करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। इस परियोजना के संचालन का कार्य 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' के माध्यम से पूरे प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी तन्मयता से ध्येयपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

कांगड़ा जिला के सफल किसानों के खेती विवरण का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रयास से अन्य प्राकृतिक खेती किसान भी अपने आप को सफल किसान के रूप में लाने का प्रयत्न करेंगे। मेरी जिला के सभी किसानों के लिए शुभेच्छा।

–राकेश कंवर

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश को देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त है। पिछले दो दशकों में प्रदेश ने बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में भी अपनी पहचान बनाई है। आज प्रदेश से लगभग 8,000 करोड़ की फल–सब्जियां देश के विभिन्न राज्यों में जा रही हैं। लेकिन स्थिर होती फसल उत्पादकता और बढ़ती कृषि–बागवानी लागत, किसान–बागवान के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार प्रदेश में खेती रसायनों के बढ़ते दुरूपयोग के कारण हर 5वां फल–सब्जी इत्यादि का नमूना कीटनाशक–फफूंदनाशक अवशेष ग्रसित है, 3 से 4% फल–सब्जियों इत्यादि के नमूनों में कीटनाशक–फफूंदनाशकों की अवशेष मात्रा अधिकतम तय सीमा से ऊपर मिल रही है जो देशभर के आंकड़ों से लगभग 1% अधिक है। खेती–बागवानी की यह परिस्थिति किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए गम्भीर चिंता का विषय बनती जा रही है।

देश का किसान आज एक ऐसी व्यावहारिक खेती विधि की तलाश में है जिससे उसकी कृषि लागत घटे और उत्पादकता तथा आय में वृद्धि हो। 'जैविक खेती' के रूप में प्रचारित वैकल्पिक विधि ने आम किसान का उत्पादन तो घटाया ही, साथ ही रसायनिक खेती के अनुपात में कृषि लागत को भी अधिक बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश को रसायनमुक्त राज्य बनाने के लिए पूर्व राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी की ओर से 2016 से ही प्रयास शुरू हो गये थे। तत्पश्चात हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'किसान की आय दोगुनी' एवं इनके दीर्घकालीन कल्याण हेतू फरवरी 2018 में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना प्रारम्भ कर इस दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के किसान–बागवानों को 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' विधि में प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारक संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह संदर्भित किया है कि 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि किसान की खेती लागत कम करने के साथ फसल उत्पादकता बढ़ाने हेतु सक्षम खेती विधि है, जिसे अपनाकर किसान आय दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा प्रदेश में एक व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है जिसमें विभिन्न गतिविधियों द्वारा एक लाख किसानों को इस वर्ष प्राकृतिक खेती विधि से जोड़ा जा रहा है। साथ ही अन्य एक लाख किसानों को विभिन्न माध्यमों द्वारा इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। अभी तक प्रदेश भर में कुल 1,74,394 किसान प्रशिक्षित किए गए हैं और 1,71,063 ने इस पद्धति से पूरी या आंशिक रूप से खेती करना आरंभ कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी और किसान इनके मॉडल फार्म पर भ्रमण कर रहे हैं।

इस प्राकृतिक विधि का जो किसान पूरी तरह प्रशिक्षित होकर प्रयोग कर रहे हैं उनकी सफलता को आंकड़ों सहित इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है, ताकि इन किसानों को प्रोत्साहन मिले और वे दूसरों के लिए भी प्रेरक बनें। भविष्य में ऐसे सफल किसानों की कहानियों को जिलावार प्रदेश के अन्य जिलों में भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

–प्रो॰ राजेश्वर सिंह चंदेल

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती-संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर-रोग-कीट-प्राकृतिक संकट-कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ-साथ किसान-बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाएगा। इन सभी क्रियाओं का इसलिए 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया गया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतु बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. **जीवामृत** किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव-जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. **बीजामृत** देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध-जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत के प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. **आच्छादन** भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. **वापसा** (भूमि में वायु प्रवाह) वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा-तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. **सह-फसल** मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करे।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेतों के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़-पौधों के लिए किसी भी बाहरी रसायनिक खाद की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट-पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण कर फसलों को शत्रु कीट-पतंगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जो इसमें बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहती है।

इस प्राकृतिक खेती की मूल आवश्यकता पहाड़ी या कोई भी भारतीय नस्ल की गाय है। इन नस्लों की गाय के गोबर में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या दूसरी विदेशी किस्म की गायों या अन्य जानवरों की तुलना में 300 से 500 गुणा अधिक है। अत: इस विधि में अधिकतम लाभ लेने के लिए विभिन्न आदान पहाड़ी या किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर तथा मूत्र से बनाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतु एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आतमा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 81 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ट मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 36,15 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

जिला कांगड़ा - परिदृश्य

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला का कुल भौगोलिक क्षेत्र 5,739 वर्ग किलोमीटर है और जनसंख्या के आधार पर यह प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है। उत्तर – पश्चिम से दक्षिण – पूर्व तक शिवालिक और धौलाधार पर्वत श्रृंखलाओं से घिरे इस जिला की औसतन ऊंचाई 500 से 5,000 मीटर तक है। जिला की अर्थव्यवस्था मुख्यत: पर्यटन और कृषि पर आधारित है।

उत्तर दिशा में चम्बा और लाहौल – स्पीति, पूर्व में हमीरपुर और ऊना तथा पश्चिम में मंडी जिला व पंजाब के साथ सीमाएं साझा करने वाले कांगड़ा जिला में फलों, सब्जियों, फूलों तथा चाय की खेती की जाती है। यहां की कांगड़ा चाय अपनी समृद्ध सुगंध, रंग और स्वाद के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त गुलेर में संतरे के बाग, इंदौरा, फतेहपुर में आम, लीची, किन्नू, निम्बूवर्गीय फलों की खेती तथा पालमपुर व कांगड़ा में धान का उत्पादन बड़े स्तर पर किया जाता है।

कांगड़ा जिला 16 विकास खण्डों में बंटा हुआ है। यहां का किसान जागरूक तथा नव – तकनीकों की स्वीकार्यता में अग्रणी है। कृषि एवं बागवानी में हो रहे नूतन प्रयोगों को खेतों में अपनाकर यहां के किसानों ने सब्जियों तथा अनाज की रिकार्ड पैदावार की है। खेती रसायनों के मानव – मृदा स्वास्थ्य पर पड़ते बुरे प्रभावों को देखते हुए यहां के किसानों ने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का दामन थामा है और 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत अपनी खेती की तस्वीर बदल रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल कृषक
3,02,132

भाषा एवं बोलियां
हिंदी, पंजाबी, पहाड़ी, गद्दी

आबादी
15,10,075

कुल क्षेत्रफल
2,13,283 हैक्टेयर

कृषि योग्य क्षेत्र
1,15,758 हैक्टेयर

प्राकृतिक खेती परियोजना के क्रियान्वयन की खण्डवार स्थिति

क्रम सं.	विकास खण्ड	कुल कृषक	प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षित किसान (31 मार्च 2022 तक)	प्राकृतिक खेती कर रहे किसान (31 मार्च 2022 तक)	प्राकृतिक खेती के अधीन भूमी (हैक्टेयर में)
1	बैजनाथ	14,622	2,508	2,812	79.96
2	पंचरूखी	4,392	2,318	2,220	37.23
3	लंबागांव	18,159	2,627	2,426	28.90
4	भवारना	9,095	3,026	2,711	42.95
5	भेडू – महादेव	10,759	2,848	2,685	40.60
6	नगरोटा बगवां	21,821	2,433	2,727	119.84
7	कांगड़ा	23,109	2,442	3,197	132.85
8	रैत	18,412	2,728	2,380	90.93
9	धर्मशाला	6,531	2,071	1,991	65.84
10	देहरा	52,751	2,500	2,617	87.86
11	परागपुर	48,716	2,495	2,777	69.94
12	नगरोटा सूरियां	18,638	2,097	2,220	101.39
13	फतेहपुर	23,510	3,017	2,632	143.65
14	नूरपुर	19,963	2,326	2,078	150.10
15	इन्दौरा	11,654	2,366	2,214	107.73
	कुल योग	3,02,132	37,802	37,687	1,299.76

सफल प्राकृतिक खेती किसान

- मोहन सिंह, पंचायत– चरूड़ी, विकास खण्ड– नूरपुर, फोन नं. 8219743020
- आदर्श महिला कृषक समूह, पंचायत– अंबाड़ी, विकास खण्ड– नगरोटा बगवां, फोन नं. 9418861015
- सुनील दत्त, पंचायत– चलोह, विकास खण्ड– इंदौरा, फोन नं. 8219786026
- श्रेष्ठा देवी, पंचायत– नंदेहड़, विकास खण्ड– कांगड़ा, फोन नं. 9816575490
- बलवंत सिंह, पंचायत– रक्कड़, विकास खण्ड– परागपुर, फोन नं. 7018895386
- रेणू बाला, पंचायत– हार, विकास खण्ड– परागपुर, फोन नं. 8219384780
- सुखजिंदर सिंह, पंचायत– धाड़– 2, विकास खण्ड– नगरोटा सूरियां, फोन नं. 8219190864
- प्रो. अशोक गोस्वामी, पंचायत– धरेड़, विकास खण्ड– बैजनाथ, फोन नं. 8219719665
- कुलवंत राज, पंचायत– सींबलखोला, विकास खण्ड– पंचरूखी, फोन नं. 9805994647
- रजीना, पंचायत– घोरन, विकास खण्ड– भवारना, फोन नं. 8894007383
- राजिंदर कुमार सिंह, पंचायत– तलवाड़, विकास खण्ड– लम्बागांव, फोन नं. 9816433794
- रोहित सापड़िया, पंचायत– लिली, विकास खण्ड– नगरोटा बगवां, फोन नं. 9459074015
- आत्मा शक्ति समूह, पंचायत– देवी, विकास खण्ड– भेडू महादेव, फोन नं. 6230323345
- संसार चंद, पंचायत– सनेहड़, विकास खण्ड– नगरोटा बगवां, फोन नं. 7018269510

सफल प्राकृतिक खेती किसान

- अशोक कुमार, पंचायत– बाहली, विकास खण्ड– बैजनाथ, फोन नं. 9816050434
- शोभा देवी, पंचायत– खबली, विकास खण्ड– देहरा, फोन नं. 9459953355
- कर्नल राजेश शर्मा, पंचायत– कमलोटा, विकास खण्ड– देहरा, फोन नं. 9418077477
- मनजीत कौर, पंचायत– इंदपुर, विकास खण्ड– इंदौरा, फोन नं. 8894554077
- नरेंद्र सिंह, पंचायत– सुनेट, विकास खण्ड– फतेहपुर, फोन नं. 8894466358
- बीर सिंह, पंचायत– इन्दपुर, विकास खण्ड– इंदौरा, फोन नं. 7807154033
- सिमरता देवी, पंचायत– चैतडू, विकास खण्ड– धर्मशाला, फोन नं. 8352050917
- अश्वनी कुमार, पंचायत– बलेटा, विकास खण्ड– नूरपुर, फोन नं. 9459069370
- राजिंदर कंवर, पंचायत– बारी, विकास खण्ड– भेडू महादेव, फोन नं. 9805923447
- श्रेष्ठा देवी, पंचायत– सरूर, विकास खण्ड– पंचरूखी, फोन नं. 7807538811
- जीवन सिंह राणा, पंचायत– धार जरोट, विकास खण्ड– नगरोटा सूरियां, फोन नं. 9418494200
- सुरेश कुमार, पंचायत– डगवार, विकास खण्ड– धर्मशाला, फोन नं. 9459078432
- विजय कुमार, पंचायत– खेहर, विकास खण्ड– फतेहपुर, फोन नं. 9817769136
- रिशू देवी, पंचायत– जमानाबाद, विकास खण्ड– कांगड़ा, फोन नं. 8219043437

विदेश में नौकरी के मुकाबले गांव में खेती से पा रहे अधिक कमाई

मोहन सिंह

विदेश में नौकरी के चाहवान युवाओं के लिए नूरपुर के किसान मोहन सिंह ने गांव में ही खेती का उत्कृष्ट मॉडल खड़ा कर रोजगार की राह प्रदान की है। चरूड़ी पंचायत के गटोत गांव के रहने वाले युवा किसान मोहन सिंह कतर और सऊदी अरब में नौकरी कर रहे थे, लेकिन परिवार से दूर होने के चलते उन्होंने वहां नौकरी छोड़ी और घर वापसी कर खेती शुरू की। मोहन बताते हैं कि पहले उन्होंने रसायनिक खेती शुरू की थी जिसमें उन्हें पैदावार तो अच्छी मिली लेकिन खर्चा भी अधिक आ रहा था। इसके बाद मोहन वर्ष 2018 में प्राकृतिक खेती जुड़े और आज वे खेती में अपनी कृषि लागत को तीन गुणा कम कर 8 लाख सालाना कमाई कर रहे हैं। गौर रहे कि हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा के विकास खंड नूरपुर में बाकी विकास खंडों की तुलना में थोड़ी कठिन भौगोलिक और मौसमी परिस्थितियां आम जनजीवन के लिए एक बड़ी चुनौती हैं। इस इलाके में ज्यादातर लोग पानी की समस्या से जूझने के कारण मौसमी फसल उगाने में ही रुचि रखते हैं। लेकिन विकट परिस्थितियों में भी मोहन सिंह ने प्राकृतिक खेती को अपनाकर न सिर्फ अपनी कृषि लागत को कम किया बल्कि पैदावार में भी बढ़ोतरी कर अपने मुनाफे को कई गुणा बढ़ाकर अन्य किसानों के सामने उदाहरण पेश किया है।

मोहन सिंह बताते हैं कि शुरू में प्राकृतिक खेती के प्रति लोगों के कम रूझान को देखते हुए उनके मन में भी कुछ सवाल उठे थे, लेकिन जब खेत में जीवामृत और दूसरे अन्य आदानों खास कर दशपर्णी अर्क के जब परिणाम देखे तो वे उनसे उत्साहित हो गए।

मोहन सिंह ने बताया कि प्राकृतिक खेती के आदानों का प्रयोग करने से मटर में लगने वाले रोग पाऊडरी मिल्डियू , गोभी में सूंडियों की समस्या और कीटों पर नियंत्रण हो गया, साथ ही भिंडी में प्ररोह एवम फल छेदक की समस्या से भी निजात बहुत तेजी से हुआ। वे कहते हैं कि प्राकृतिक खेती में फसलें अधिक समय तक टिकी रहती हैं और उत्पादन भी पहले की तुलना में बेहतर हो रहा है।

मोहन सिंह अब अनाज और सब्जियों के अलावा अपने आम के बाग और अन्य फलों में भी प्राकृतिक खेती को अपनाने जा रहे हैं। वे गांव के अन्य किसानों को भी इस खेती को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

> “प्राकृतिक खेती से फसलों की रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ी है। रसायनिक खेती में जिन रोगों की रोकथाम नहीं हो पाती थी, वह प्राकृतिक खेती से हो रही है।”

विस्तृत विवरण

कुल जमीन - 84 कनाल (42 बीघा) प्राकृतिक खेती में जमीन - 40 कनाल (20 बीघा)

फसलें व फल - खीरा, फ्रासबीन, गोभी, मटर, मूली, शलगम, धनिया, पालक, आम, संतरा

रसायनिक खेती - व्यय: 1,50,000 आय: 7,00,000

प्राकृतिक खेती - व्यय: 50,000 आय: 8,00,000

प्राकृतिक खेती का अग्रदूत -आदर्श महिला कृषक समूह

शर्मिला देवी (प्रधान)

मौसमी सब्जियों और धान की खेती के लिए लोकप्रिय नगरोटा बगवां विकास खंड के अंबाड़ी क्षेत्र में प्राकृतिक खेती जोर पकड़ रही है। जो गांव पहले खुद को रसायन आधारित खेती तक समेटे हुआ था अब उस गांव में प्राकृतिक खेती को अपनाने की रफ्तार बढ़ रही है। इसकी शुरूआत हुई गांव की दो महिलाओं शर्मिला देवी और गुड्डी देवी के प्राकृतिक खेती में सफल प्रयोग के बाद। इन दोनों महिला किसानों ने 2018 में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण हासिल किया और 1-1 खेत में सफलतापूर्वक प्रयोग के बाद गांव की अन्य महिलाओं को भी समूह बनाकर इस खेती के प्रति प्रेरित करना शुरू कर दिया।

आज इस समूह की 20 सदस्य 16 कनाल (8 बीघा) भूमि पर धान, गेहूं, मक्की, आलू सहित लीची का उत्पादन प्राकृतिक खेती से कर रही हैं। समूह की प्रधान शर्मिला देवी ने बताया कि पहले धान की कोंपले सफेद हो जाती थीं और ज्यादा नमी से करनाल बंट रोग के प्रकोप से फसल बर्बाद हो जाती थी लेकिन अब इन रोगों से निजात मिल गई है।

“शुरूआत में मेरे पति इस विधि के खिलाफ थे। मैंने जिद करके 2 खेतों में आलू और धान प्राकृतिक खेती से लगाए। पहले साल पैदावार पर असर पड़ा लेकिन उसके बाद पैदावार और गुणवत्ता दोनों बढ़ी। अब मेरे पति भी मेरा साथ दे रहे हैं और हम इस खेती विधि के अधीन जमीन बढ़ा रहे हैं- बीना देवी”

समूह की सदस्य कमलेश ने बताया कि वह अपने पड़ोस में प्राकृतिक खेती कर रही महिलाओं के खेत को देखती थी और इस विधि के बारे में भी पूछती थी। जब उन्होंने प्राकृतिक खेती से उगी सब्जियों को देखा तो उन्होंने भी इस विधि को अपनाने का मन बना लिया। चूंकि पति और सास-ससुर खेतों में प्रयोग के खिलाफ थे तो उन्होंने क्यारी में इस विधि का परीक्षण किया और आश्वस्त होने के बाद खेतों में इसको प्रयोग किया। कल्पना देवी ने बताया कि उन्होंने इस विधि से 10 क्विंटल आलू की पैदावार न्यूनतम खर्च पर ली है। पहले उनका परिवार डेढ़ क्विंटल रसायनिक खाद खरीदता था जो अब बंद कर दी है।

इस समूह के सदस्य एक-दूसरे के यहां इकट्ठे होकर बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, सप्तधान्यांकुर अर्क एवं अन्य आदान बनाते हैं। हर महीने पंचायत की बैठक में भी वे आस-पास के गांव के किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में बताते हैं। अब यह समूह गांव को रसायनमुक्त करने के साथ प्राकृतिक विधि से सेब लगाने की योजना पर कार्य कर रहा है।

समूह के सदस्य- अपर्णा देवी, कल्पना, नीलम, कमलेश, शशिबाला, मनभरी, कमलेश, पूजा देवी, रीमा देवी, किरना, चंचला देवी, मीना कुमारी, गुड्डी देवी, कमलेश, सुनीता, मंगला देवी, डिंपल कुमारी, रीना देवी, चंपा देवी, शर्मिला देवी, बीना देवी

प्राकृतिक खेती कर रहे इस युवा किसान ने खरपतवारों से पाया छुटकारा

सुनील दत्त

गेहूं और अन्य फसलों में खरपतवार की समस्या से जूझ रहे किसानों के लिए इंदौरा ब्लॉक के दो प्राकृतिक खेती किसानों ने अनूठा उपाय बताया है। इंदौरा विकास खंड की भरलाड़ पंचायत सुनील दत्त प्राकृतिक खेती को अपनाकर न सिर्फ अपनी कृषि लागत को कम किया है, बल्कि खेती में खरपतवारों को कम करने का तरीका भी इजात कर लिया है। तीन सालों से प्राकृतिक खेती से जुड़े सुनील दत्त अपने एक दोस्त संजय कुमार के साथ मिलकर 35 कनाल भूमि में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। इन दोनों मेहनती किसानों ने अपने खेत में पांच तरह की गेहूं की किस्मों के साथ एक दर्जन से अधिक सब्जियों को लगाया है। सुनील दत्त ने बताया कि प्राकृतिक खेती विधि को अपनाने के बाद उन्होंने खेतों में गोबर और अन्य रसायनों को प्रयोग पूरी तरह बंद कर दिया है। इसके बदले में वे प्राकृतिक खेती विधि में बताए हुए आदानों का प्रयोग करते हैं। जिसकी वजह से उनकी खरपतवार की समस्या कम हुई है और उत्पादन में भी किसी तरह का कोई असर नहीं पड़ा है।

सुनील बताते हैं यदि किसान खरपतवारों से बचना चाहते हैं तो वे खेत में एक ही तरह की फसलें लगाने के बजाए हर सीजन में फसलों को बदलकर लगाया करें। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि जिस खेत में ज्यादा खरपतवार की समस्या हो उसमें अगली फसल बरसीन की लगाएं और इसके बाद उसमें धान की फसल लगाए। इससे अगली बार खरपतवार कम होंगे। इसके अलावा उन्होंने बताया कि गोबर से भी खरपतवारों की संख्या में बढ़ोतरी होती है इसके लिए हमें जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग करना चाहिए।

सुनील के दोस्त संजय कुमार बताते हैं कि प्राकृतिक खेती में उन्हें अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं। इस खेती विधि में उन्हें बार-बार जोताई करने की भी जरूरत नहीं पड़ती है। हमारी देखा देखी में क्षेत्र के अन्य किसान भी इसे अपनाने शुरू कर चुके हैं। अभी तक हम 150 से अधिक किसानों को इस खेती विधि से जोड़ चुके हैं।

> **“प्राकृतिक खेती विधि को पूरी तरह से अपनाने से किसान को किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुंचता है। इसे हमने अपने खेतों में आजमाया है और हमारी कृषि लागत कई गुणा घट गई है।”**

विस्तृत विवरण

कुल जमीन - 80 कनाल (40 बीघा) प्राकृतिक खेती में जमीन - 35 कनाल (17.5 बीघा)

फसलें व फल - मूली, करेला, शलगम, धनिया, पालक, प्याज, लहसुन, मटर, गेहूं, धान, मक्की, गोभी और आम

रसायनिक खेती - व्यय: 1,00,000 आय: 4,00,000

प्राकृतिक खेती - व्यय: 15,000 आय: 4,00,000

सब्जी बहुल क्षेत्र में महिला किसान ने बनाई अलग पहचान

श्रेष्ठा देवी

कांगड़ा जिला में बल्लाह और इसके आस-पास के क्षेत्र में ज्यादातर किसान परम्परागत अनाज फसलों के बजाए सब्जियों की खेती करते हैं। सब्जी बहुल इस क्षेत्र में श्रेष्ठा देवी ने रसायनों को त्यागकर प्राकृतिक खेती विधि से सब्जियों को उगाने की चुनौती को स्वीकारा और 5 कनाल (2.5 बीघा) भूमि पर कम लागत में खेती कर अपनी विशेष पहचान बनाई है। श्रेष्ठा देवी पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से खेती-बाड़ी करती आ रही हैं लेकिन लगातार बढ़ती कृषि लागत से तंग आकर उन्होंने प्राकृतिक खेती की ओर रूख किया। श्रेष्ठा बताती हैं कि रसायनिक विधि में सब्जियों में बहुत बीमारियां आ रही थी और इनकी रोकथाम के लिए हर साल 45 हजार रूपये खर्च करने पड़ रहे थे।

श्रेष्ठा बताती हैं कि उन्होंने 2018 में प्राकृतिक खेती के बारे में प्रशिक्षण लिया। इसके बाद आधा कनाल के खेत पर इसका परीक्षण किया। पहले साल में अच्छा परिणाम मिलने के बाद अब मैं अपनी 5 कनाल भूमि में एक सीजन में 12 तरह की सब्जियां उगा रही हूं। उन्होंने कहा कि बहुफसलीय प्रणाली की वजह से मेरा मुनाफा बढ़ा है। साथ ही मेरी उगाई हुई सजिब्यों की बाजार में बहुत अधिक मांग रहती है और वे हाथों-हाथ बिक जाती हैं।

प्राकृतिक खेती में महारत पा चुकी श्रेष्ठा को अब क्षेत्र के ज्यादातर किसान पहचानने लगे हैं और उनकी देखा-देखी में वे भी इस खेती को अपनाने लगे हैं। श्रेष्ठा ने बताया कि वे अभी तक इस खेती विधि से 100 से अधिक किसानों को जोड़ दिया है। श्रेष्ठा के पास कांगड़ा जिला की युवा प्रशिक्षु किसान मनप्रीत 6 माह के लिए प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण पाने के लिए आई हुई है। मनप्रीत ने बताया कि वे प्राकृतिक खेती के गुर सीख रही हैं और प्रशिक्षण पूरा होने के बाद मैं अपने घर में भी इस खेती विधि को अपनाउंगी।

शुरूआती दौर में जो लोग प्राकृतिक खेती विधि को बेकार बताते थे वे आज इस खेती विधि को अपना रहे हैं और इससे होने वाले फायदों का लाभ उठा रहे हैं।

> **“मैं प्राकृतिक खेती से खासकर महिलाओं को जागरूक करने की कोशिश कर रही हूं मेरी देखा-देखी में क्षेत्र की दर्जनों महिलाओं ने इस खेती विधि को अपना लिया है।”**

विस्तृत विवरण

कुल जमीन - 12 कनाल (6 बीघा) प्राकृतिक खेती में जमीन - 5 कनाल (2.5 बीघा)

फसलें - खीरा, भिंडी, फ्रासबीन, धनिया, प्याज, लहसून, मटर, गेहूं, धान, मक्की, गोभी, मूली, शलगम, पालक

रसायनिक खेती - व्यय: 45,000 आय: 1,30,000

प्राकृतिक खेती - व्यय: 20,500 आय: 1,28,000

जंगल मॉडल तैयार कर साथी किसानों को प्ररित कर रहे बलवंत

बलवंत सिंह

कांगड़ा जिला का परागपुर वैसे तो गेहूं, अदरक, मक्की की खेती के लिए मशहूर है लेकिन अब यहां के किसान फलों की खेती को भी प्रमुखता दे रहे हैं। मौजूदा समय की चुनौतियों और भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र के किसान प्राकृतिक खेती की ओर रूख कर रहे हैं। भ्रांता गांव के बलवंत सिंह भी ऐसे ही एक किसान हैं जिन्होंने देश सेवा के बाद खेती करने की ठानी और इसके लिए प्राकृतिक खेती को अपनाया।

बलवंत सिंह ने बताया कि पालमपुर में पदम् श्री सुभाष पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने इस खेती की शुरूआत की। घर पर देसी गाय नहीं थी इसलिए वह दूसरे गांव से जाकर देसी गाय का गोबर और गोमूत्र इकट्ठा करके लाए और विभिन्न खेती आदान बनाने लगे। जब वह इनका प्रयोग खेती में करने लगे तो साथी किसानों ने उन्हें बड़ा हतोत्साहित किया लेकिन जैसे – जैसे लोगों ने इस खेती के नतीजे देखे तो उनका नजरिया बदलने लगा।

वर्तमान में बलवंत सिंह पालेकर खेती के जंगल मॉडल पर काम कर रहे हैं। 10 कनाल (5 बीघा) क्षेत्र में वह नींबू के 60, गलगल के 50, हरड़ के 100, आंवला के 60, पपीता के 10 पौधों सहित सागवान व तुणी के पौधों पर प्राकृतिक खेती आदानों का प्रयोग कर रहे हैं। आदान बनाने के लिए गोबर एवं गोमूत्र हेतु उन्होंने साहीवाल नस्ल की गाय भी खरीद ली है। फल एवं सब्जी की खेती में उनके सफल प्रयोग को देखते हुए अब आस – पास के किसान उनके पास पहुंच रहे हैं।

> **“इस खेती को अपनाने के बाद गांव वालों ने पागल फौजी कहकर पुकारना शुरू किया था, लेकिन इसके परिणाम आने के बाद गांव वालों की सोच में भी बदलाव आया है और अब वे भी सहयोग कर रहे हैं”**

प्राकृतिक खेती में उत्कृष्टता के लिए बलवंत सिंह को वनमंत्री राकेश पठानिया ने अवार्ड देकर सम्मानित किया है। इससे उत्साहित होकर अब बलवंत सिंह अपनी पंचायत की महिला किसानों के समूह को रसायन मुक्त फसलें उगाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इन किसानों को गाय का गोबर, गोमूत्र व आदान देने के साथ वह समय – समय पर प्राकृतिक खेती से संबंधित जरूरी जानकारियां देकर इनके खेतों पर भी जाते हैं।

“मैं किसानों को खेती के साथ बागवानी के लिए भी प्रेरित कर रहा हूं। किसान मेरे मॉडल को देखकर इसे अपना रहे हैं।”

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन- 10 कनाल (5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन- 10 कनाल (5 बीघा)

फसलें व फल- गेहूं, अदरक, मक्की, मटर, चना, लहसुन, गोभी, सेब, चीकू व आड़ू

रसायनिक खेती- व्यय: 40,000 आय: 1,50,500

प्राकृतिक खेती- व्यय: 6,000 आय: 1,75,000

परिवार की नाराजगी को प्रशंसा में बदल रेणू बनी मिसाल

रेणू बाला

खेती में पुरूषों की सफलता की कहानियां तो अकसर पढ़ी और सुनने को मिल जाती हैं लेकिन खेती में महिलाओं के योगदान का उल्लेख कम ही मिलता है। कांगड़ा जिले के परागपुर की किसान रेणू बाला ने अपनी मेहनत के बूते खेती में न केवल अपना परचम लहराया है बल्कि विशेष पहचान भी हासिल की है। धुन की पक्की रेणू पूरे क्षेत्र में प्राकृतिक खेती की अग्रदूत बनकर उभरी हैं और बाकि किसानों को इस विधि की तरफ मोड़ रही हैं।

रेणू बाला ने 2019 में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया और इस विधि को अपनाने की ठान ली। इसके लिए रेणू ने परिवार वालों से अलग प्लॉट लिया और पड़ोसी से देसी गाय के गोबर – गोमूत्र लेकर आदान बनाए तथा उनका प्रयोग शुरू कर दिया। रेणू का प्रयोग असफल हो गया और फसल का नुकसान भी हुआ। मगर असफलता को सफलता में बदलने का इरादा बनाकर अगले साल फिर इस विधि से खेती की।

दूसरे साल में रेणू को सफलता मिली और इसके बाद धीरे – धीरे उन्होंने प्राकृतिक खेती के अधीन दायरे को बढ़ाना शुरू कर दिया। वर्तमान में रेणू 40 कनाल (20 बीघा) भूमि में प्राकृतिक खेती से विविध फसलें ले रही हैं। वह अपने यहां प्रशिक्षु किसान रंजना को प्राकृतिक खेती के गुर सिखा रही हैं। इसके अलावा वह क्षेत्र में होने वाले विभिन्न आयोजनों में भी प्राकृतिक खेती पर अपना अनुभव साझा कर बाकि किसानों का संवेदीकरण कर रही हैं। अब तक रेणू 500 से अधिक परिवारों को इस खेती के प्रति जागरूक कर चुकी हैं।

> **“मेरी सास को कैंसर की बीमारी थी और डॉक्टरों ने उन्हें वापस घर भेज दिया था। मैंने जब प्राकृतिक खेती की शुरुआत की तो इसके उत्पाद ही उन्हें खिलाया करती थी। आज वे पूरी तरह स्वस्थ हैं और इस खेती के लिए आस-पास वालों को प्रेरित करती हैं।”**

रेणू की आगामी योजना गांव को रसायनमुक्त कर प्राकृतिक खेती से जोड़ने की है। इसके लिए रेणू आस – पास के किसानों को प्राकृतिक खेती आदान बनाना सिखा रही हैं। वह इनके प्रयोग और आवृत्ति के बारे में उन्हें बताने के साथ खेती से जुड़ी उनकी समस्याओं के हल भी सुझा रही हैं। रेणू कहती हैं कि प्राकृतिक खेती ही परिवार, समाज और देश का दीर्घकालिक कल्याण सुनिश्चित करेगी।

"मुझे घर के आसपास ही अपने उत्पादों के खरीददार लगातार मिल रहे हैं। खेती उत्पादों के विपणन को सुगम बनाने के लिए कृषि विभाग ने मुझे कैनोपी भी दी है। इससे ग्राहकों की संख्या बढ़ी है जिससे मैं बेहद खुश हूं।"

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन - 50 कनाल (25 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन - 40 कनाल (20 बीघा)

फसलें - मक्की, गेहूं, मटर, प्याज, लहसुन, गोभी, भिंडी, आलू

रसायनिक खेती - व्यय: 40,000 आय: 2,00,000

प्राकृतिक खेती - व्यय: 10,000 आय: 2,00,000

धैर्य और विश्वास ने दिलाया प्राकृतिक खेती अग्रणी का तमगा

सुखजिंदर सिंह

असफलताओं से पार पाकर जो सफलता मिलती है वह स्थायी और दूरगामी होती है। हमें असफलताओं से घबराना नहीं चाहिए बल्कि उनका मुकाबला करते हुए आगे बढ़ते जाना चाहिए तभी सफलता मिलती है। यह कहना है नगरोटा सूरियां विकास खण्ड के बलदोआ निवासी किसान सुखजिंदर सिंह का जिन्होंने 2 साल अच्छे परिणाम न मिलने के बावजूद प्राकृतिक खेती का दामन थामे रखा। आज यह किसान कांगड़ा जिला के किसानों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनकर उभरा है।

सुखजिंदर सिंह ने बताया कि उन्होंने अपने पिता प्रीतम सिंह के साथ पालमपुर में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया। पदम् श्री सुभाष पालेकर के 6 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर ने उनका खेती के प्रति दृष्टिकोण बदल दिया। घर लौटकर पिता-पुत्र की इस जोड़ी ने प्राकृतिक खेती को 2 कनाल (1 बीघा) जमीन पर अपनाया। शुरूआती दो साल में इन्हें नुकसान हुआ मगर पालेकर जी के शिविर से वह इतने प्रभावित थे कि प्राकृतिक खेती करते रहे।

सब्जियों की खेती के लिए प्रसिद्ध इस क्षेत्र में लोग घीया, कद्दू, खीरा जैसी बेलदार फसलें ज्यादा लेते हैं। सुखजिंदर ने बताया कि उन्हें सभी प्रकार की सब्जियों के साथ सरसों, लहसुन, गेहूं एवं मक्का में भी इस विधि से बाकि किसानों के मुकाबले बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं। पिता-पुत्र की यह जोड़ी अब बाकि किसानों को भी इस विधि की तरफ मोड़ रही है। इसके लिए वह मार्गदर्शन करने के साथ किसानों को सब्जियों की पनीरी भी तैयार करके दे रहे हैं।

> **“मैं पहले भी सड़क किनारे शामियाना लगाकर सब्जियां बेचता था लेकिन ग्राहक कम आते थे। जबसे कृषि विभाग ने मुझे कैनोपी दी है, ग्राहकों की संख्या 50 प्रतिशत ज्यादा बढ़ गई है।”**

सुखजिंदर के यहां एक प्रशिक्षु किसान भी प्राकृतिक खेती सीख रहा है। पिता-पुत्र की जोड़ी के अलावा सुखजिंदर की पत्नी भी प्राकृतिक खेती के प्रसार में अहम भूमिका निभा रही हैं। वह सरस्वती महिला समूह से जुड़ी हैं और इम समूह की सदस्यों को प्राकृतिक खेती की जानकारी दे रही हैं। समूह की कुछ महिलाएं अपने-अपने खेत व क्यारी में इस विधि को अपनाना शुरू कर चुकी हैं।

> 72 साल की उम्र में पहली बार कोई ऐसी खेती विधि देखी है, जो सच में किसान हितैषी है। हर किसान-बागवान को यह विधि अपनानी चाहिए। -सुखजिंदर के पिता प्रीतम सिंह

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन- 25 कनाल (12.5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन- 25 कनाल (12.5 बीघा)

फसलें- घीया, कद्दू, खीरा, लहसुन, सरसों, मक्की, गेहूं

रसायनिक खेती- व्यय: 40,000 आय: 1,50,500

प्राकृतिक खेती- व्यय: 6,000 आय: 1,75,000

बंजर भूमि में हरियाली ला फार्म टूरिज्म का मॉडल कर रहे विकसित

प्रो. अशोक गोस्वामी

प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक पर्यटन के लिए प्रसिद्ध बैजनाथ को फार्म टूरिज्म डेस्टिनेशन के रूप में ख्याति दिलाने के लिए यहां के धरेड़ गांव में एक रिटायर प्रोफेसर ने नवीन पहल की है। धरेड़ गांव के रिटायर प्रो. अशोक गोस्वामी ने 20 बीघा बंजर भूमि को कई सालों की मेहनत के बाद 20 तरह के फलों वाले बागीचे में परिवर्तित कर हरा भरा कर दिया है। अशोक गोस्वामी इस भूमि में प्राकृतिक खेती विधि से फलों के साथ कई तरह की सब्जियों और अनाज फसलों का उत्पादन ले रहे हैं। अशोक गोस्वामी रिटायरमेंट के बाद अब पूरा समय फार्म में व्यतीत करते हैं और प्राकृतिक खेती विधि को पूरी तरह अपनाने के लिए उन्होंने देसी गाय की खरीद की है।

प्राकृतिक खेती विधि से फार्म टूरिज्म का मॉडल खड़ा करने वाले प्रो. अशोक बताते हैं कि वे हिमाचल के पूर्व राज्यपाल आचार्य देवव्रत से प्रेरित होकर इस खेती से जुड़े थे। उन्होंने बताया कि इस खेती विधि में मुझे बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं। उन्होंने बताया कि मेरे फार्म में 20 तरह के फलदार पौधे लगे हैं और सभी में फल आना शुरू हो गए हैं।

उन्होंने बताया कि मेरे पास दूर-दूर से लोग आते हैं और वे मेरे इस प्रयास को बहुत सराह रहे हैं। इसलिए अब मैंने अपने फार्म को 'नेचुरल एग्रोटूरिज्म' नाम देने का फैसला लिया है।

प्रो अशोक बताते हैं कि मेरी बहन राज्यसभा सांसद इंदू गोस्वामी मेरे फार्म में आकर फलदार पौधों और फसलों को देखकर बहुत खुश होती है और मेरे इस प्रयास की सराहना करती है। वह कहती हैं कि मेरा यहां से जाने का मन ही नहीं करता है।

20 बीघा में प्राकृतिक खेती के मॉडल की देखरेख के लिए उन्होंने चार स्थानीय लोगों को काम पर रखा है। प्रो. अशोक कहते हैं कि हमारा यह क्षेत्र फलों के साथ मटर, धनिया, अदरक, लहसुन, प्याज और खीरा की फसलों के लिए बहुत ही उत्तम है। इसलिए किसानों को परंपरागत अनाज फसलों से हटकर फलों और सब्जियों की खेती की ओर रूख करना चाहिए ताकि उनकी आर्थिकी और बेहतर हो सके।

> **"प्राकृतिक खेती विधि में किसानों को मिश्रित फसलें लगानी होती हैं जिससे उन्हें थोड़े-थोड़े समय में आय होती रहती है। मेरा मानना है कि सभी किसानों को इस खेती विधि को प्रयोग के तौर पर शुरू करके इसका दायरा बढ़ाना चाहिए।"**

विस्तृत विवरण

कुल जमीन- 40 कनाल (20 बीघा), प्राकृतिक खेती में जमीन- 40 कनाल (20 बीघा)

फसलें व फल- सेब, निंबू, संतरा, मौसमी, अमरूद, आम, प्लम, अनार, केला, किवी, गेहूं, प्याज, लहसुन, मटर, मक्की, गोभी, मूली, शलगम, धनिया, खीरा, पालक

प्राकृतिक खेती- व्यय: 7,500 आय: 2,50,000

कृषि कर्मण पुरस्कार विजेता कुलवंत राज की नई पहल 'प्राकृतिक खेती'

कुलवंत राज

देश में कृषि के क्षेत्र में किसानों को दिए जाने वाले सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक 'कृषि कर्मण' पुरस्कार प्राप्त करने वाली विजय लक्ष्मी और कुलवंत राज ने प्राकृतिक खेती से जुडकर एक नई पहल शुरू की है। वर्ष 2015 – 16 में गेहूं उत्पादन में बेहतरीन काम करने के लिए तत्कालीन केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री के हाथों सम्मानित होने वाले पंचरूखी विकासखंड के कुलवंत राज और उनकी पत्नी विजय लक्ष्मी न सिर्फ खुद प्राकृतिक खेती से जुड़े हैं, बल्कि अपने आस – पास के किसानों को भी इस खेती विधि से जोड़ने का काम कर रहे हैं। कुलवंत राज और उनकी पत्नी ने प्राकृतिक खेती शुरू करने से पहले पालेकर जी से इस खेती विधि का छह दिन का प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने अपनी 5 बीघा जमीन में इस सफलता से किया और अपनी जमीन के साथ ढाई बीघा जमीन और लीज पर लेकर उसमें भी प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

कुलवंत राज कहते हैं पहले साल उन्हें इस खेती विधि का पूरा ज्ञान न होने की वजह से थोड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा लेकिन अब तीसरा वर्ष चला है और वे पूरी तरह इस खेती विधि में पारंगत हो गए हैं। उन्होंने बताया कि इस खेती विधि में अब उन्हें पहले के मुकाबले अधिक आय हो रही है। इसके अलावा उनके खेतों की मिट्टी की गुणवत्ता भी अच्छी हुई है।

कुलवंत राज और उनकी पत्नी विजय लक्ष्मी सिंबलखोला पंचायत के साथ अन्य तीन पंचायतों में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों के लिए मार्गदर्शक का काम कर रहे हैं। साथ ही क्षेत्र के अन्य किसानों को इस खेती विधि से जोड़ने का काम भी कर रहे हैं। कुलवंत राज बताते हैं कि वे अभी तक इस खेती विधि के प्रति 400 से अधिक लोगों को जागरूक कर चुके हैं।

कुलवंत का कहना है कि वे अपने खेतों में उगी हुई सब्जियों को सड़क किनारे ढेला लगाकर बेचते हैं। उन्होंने बताया कि जब वे सब्जियों को बेचने के लिए रखते हैं तो वे हाथों – हाथ बिक जाती हैं, और उन्हें इसके लिए किसी तरह की मार्केटिंग की जरूरत भी नहीं पड़ती।

> "जो उपभोक्ता प्राकृतिक खेती उत्पाद को एक बार लेता है वह इसे बार-बार लेने आता है और इसके लिए वह अधिक दाम देने को भी तैयार बैठा है। मैं एक घंटे में डेढ़ क्विंटल तक सब्जियां बेच देता हूं। -कुलवंत राज"

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 15 कनाल (7.5 बीघा) प्राकृतिक खेती में जमीन– 15 कनाल (7.5 बीघा)

फसलें– गेहूं, प्याज, लहसून, मटर, गेहूं, धान, मक्की, गोभी, मूली, शलगम, धनिया, पालक

रसायनिक खेती– व्यय: 15,000 आय: 1,00,000

प्राकृतिक खेती– व्यय: 500 आय: 1,35,000

ससुर और बहू ने ब्लॉक को रसायनमुक्त करने की छेड़ी मुहिम

रजीना देवी

भवारना ब्लॉक के घोरन पंचायत के एक परिवार के ससुर और बहू ने अपने आप खेती में प्रयोग होने वाले रसायनों को तिलाजंली देकर अब पूरे क्षेत्र को रसायनमुक्त करने की मुहिम छेड़ रखी है। घोरन पंचायत के कर्मचंद और उनकी बहु रजीना 2018 से प्राकृतिक खेती से जुड़े हुए हैं और इन्होंने अपनी पूरी भूमि को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित कर दिया है। 12 कनाल (6 बीघा) भूमि में प्राकृतिक खेती करने वाली रजीना का कहना है कि इस खेती विधि में उन्हें शुरूआती दौर में ही बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। उन्होंने कहा कि इस खेती विधि में न सिर्फ उन्हें बेहतर पैदावार मिली बल्कि इससे उनकी क्षेत्र में नई पहचान भी मिली है। प्राकृतिक खेती करने वाली रजीना को भवारना ब्लॉक में प्रगतिशील किसान के रूप में पहचाना जाता है।

रजीना के ससुर कर्मचंद ने कहा कि प्राकृतिक खेती की फसलों और रसायनिक खेती की फसलों में साफ अंतर देखने को मिलता है। उन्होंने बताया कि इस बार पीला रतुआ आया था लेकिन इसका प्रकोप हमारी गेहूं में कम हुआ और हमने प्राकृतिक खेती विधि में बताए हुए आदानों से इसका बहुत अच्छा नियंत्रण भी किया। कर्मचंद कहते हैं कि हमने अपने खेतों में प्राकृतिक खेती मॉडल लगाया हुआ है, जिसे हम गांव व पंचायत के अन्य किसानों को दिखाकर इस खेती विधि को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

रजीना के खेती मॉडल और क्षेत्र में प्राकृतिक खेती के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाने के लिए उन्हें महिला दिवस के मौके पर राज्यपाल की अध्यक्षता में हुए प्राकृतिक खेती महिला किसान के राज्य स्तरीय कार्यशाला में भी भाग लेने का मौका मिला था। इस कार्यक्रम में रजीना ने प्राकृतिक खेती से संबंधित अपने अनुभव किसानों के सामने साझा किए थे।

रजीना अभी तक क्षेत्र के 300 से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ चुकी हैं और उनका कहना है कि आने वाले समय में वे पूरे ब्लॉक को प्राकृतिक खेती से जोड़ देंगी।

> **“प्राकृतिक खेती में पहले साल से ही चमत्कारिक परिणाम देखने को मिलते हैं यदि हम इसे पूरी तरह अपनाएं। किसानों को चाहिए कि वे इस विधि को अच्छे से अपनाएं जिससे उन्हें बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिलेंगे।”**

विस्तृत विवरण

कुल जमीन - 15 कनाल (7.5 बीघा) प्राकृतिक खेती में जमीन - 15 कनाल (7.5 बीघा)

फसलें - फ्रासबीन, प्याज, लहसुन, मटर, गेहूं, धान, मक्की, गोभी, मूली, शलगम, भिंडी, धनिया, पालक, बैंगन, खीरा

रसायनिक खेती - व्यय: 8,000 आय: 75,000

प्राकृतिक खेती - व्यय: 2,000 आय: 87,465

सब्जियों की व्यवसायिक खेती में फायदेमंद साबित हुई प्राकृतिक खेती

राजिंदर कुमार सिंह

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना की शुरूआत के बाद प्रदेशभर में किसान सुभाष पालेकर खेती अपनाकर अपनी आर्थिकी सुदृढ़ कर रहे हैं। लम्बागांव विकास खण्ड के राजिंदर कुमार भी ऐसे ही किसान हैं जिन्होंने प्राकृतिक खेती को व्यवसायिक तौर पर अपनाकर अपनी आजविका को संबल दिया है। भूतपूर्व सैनिक राजिंदर कुमार ने बताया कि सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने खेती की तरफ रूख किया। इस दौरान उन्होंने रसायनों की बढ़ती खपत को देखा जो उन्हें अच्छा नहीं लगा। रसायनों के प्रयोग को कम करने की राह तलाशते हुए 2019 में उन्होंने नौणी विश्वविद्यालय से प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षण लिया।

प्रशिक्षण शिविर में जब उन्होंने जाना कि बिना रसायनों के भी खेती हो सकती है तो उन्होंने इसी विधि से खेती करने की ठान ली। घर आकर उन्होंने थोड़ी सी भूमि में प्राकृतिक खेती पर ट्रायल किया। पहले साल उत्पादन कम हुआ लेकिन धैर्य रखते हुए उन्होंने इस खेती को जारी रखा। दूसरे साल में उन्हें अच्छी पैदावार मिली और उन्होंने सब्जियों की खेती में पूरी तरह से इस विधि को अपना लिया।

राजिंदर कुमार ने बताया कि वर्तमान में वह 5 कनाल भूमि पर प्राकृतिक खेती से मौसमी और बेमौसमी सब्जियां ले रहे हैं। इस खेती विधि में उनका खर्च 4 गुना कम हो गया है। राजिंदर गेहूं और मक्की की फसल पर भी वह इसी विधि का प्रयोग कर रहे हैं। सब्जियों की खेती से उन्हें अच्छी आमदनी हो रही है और इस बात की संतुष्टि भी है कि वह रसायन रहित चीजें लोगों को दे रहे हैं। राजिंदर ने बताया कि प्राकृतिक खेती से तैयार सब्जियों के अनूठे स्वाद और गुणवत्ता के चलते उन्हें पक्के खरीददार मिले हैं। वह खेत से ही सब्जियां बेच रहे हैं और बाजार भाव से 10 रूपए प्रति किलो अतिरिक्त आमदनी कमा रहे हैं।

> **“प्राकृतिक खेती पर जब मेरा विश्वास डगमगा रहा था तो मेरी 90 वर्षीय माता जी ने मुझे हौसला दिया और मैंने इस खेती को जारी रखा। आज बंपर पैदावार मिल रही है और सामान बेचने बाजार भी नहीं जाना पड़ रहा। इससे मेरी माता जी बेहद खुश हैं और आस-पड़ोस के किसानों को यह विधि अपनाने के लिए कह रही हैं।”**

प्राकृतिक खेती को लोगों तक पहुंचाने के लिए राजिंदर कृषि विभाग की मदद भी कर रहे हैं। वह अपने आस-पास की 3 पंचायतों में लोगों को इस विधि के गुर सिखा रहे हैं। अभी तक विभिन्न शिविरों के माध्यम से वह 200 से अधिक लोगों को प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूक कर चुके हैं। राजिंदर के मार्गदर्शन में 50 से अधिक किसान इस विधि को अपने खेतों में करना प्रारम्भ कर चुके हैं। राजिंदर कुमार की आगामी योजना प्राकृतिक खेती के अधीन भूमि बढ़ाने और पंचायत को रसायनरहित करने की है।

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन-45 कनाल (27.5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन-5 कनाल (2.5 बीघा)

फसलें-गेहूं, मक्की, मटर, गोभी, बैंगन, घीया, फ्रासबीन, भिंडी, आलू, खीरा

रसायनिक खेती-व्यय: 6,000 आय: 1,25,000

प्राकृतिक खेती-व्यय: 1,500 आय: 1,37,500

युवा किसान ने बताया प्राकृतिक खेती को आजीविका का उत्तम जरिया

रोहित सापड़िया

शिक्षा हासिल कर खेती को आजीविका का साधन बनाने वाले युवाओं की संख्या लगातार कम हो रही है। कई युवा उच्च शिक्षा हासिल कर नौकरी की तलाश में बाहर जा रहे हैं। इस रूझान के विपरीत कांगड़ा जिला के एक युवा ने न सिर्फ खेती को अपनाया बल्कि अच्छी कमाई करके बाकि युवाओं को भी खेती की तरफ मोड़ा है। यह कहानी है नगरोटा बगवां के लिली गांव निवासी रोहित सापड़िया की जिन्होंने वाणिज्य में परास्नातक की डिग्री हासिल कर खेती को चुना।

29 वर्षीय रोहित के इस फैसले से परिवार नाखुश था लेकिन रोहित खेती करते रहे। 2020 में उन्होंने प्राकृतिक खेती पर आयोजित एक शिविर में हिस्सा लिया। जहां आतमा परियोजना के अधीन कार्यरत खंड तकनीकी प्रबंधक एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक ने प्राकृतिक खेती की व्यावहारिक जानकारी के साथ आदान निर्माण और उनके उपयोग के बारे में भी बताया। शिविर के बाद रोहित ने इस खेती पर परीक्षण शुरू कर दिया।

शुरूआत में रोहित ने आतमा की टीम से जरूरी मार्गदर्शन हासिल किया और धीरे-धीरे इस खेती में पारंगत हो गए। आज रोहित साथी किसानों को भी प्राकृतिक खेती सिखा रहे हैं। रोहित ने प्राकृतिक खेती से सब्जियों एवं अनाजों पर अच्छे नतीजे लिए हैं। इस साल रोहित ने प्राकृतिक खेती से बैंगन और शिमला मिर्च की पनीरी तैयार करके बेची और इससे 1 लाख रूपए की आय अर्जित की है।

रोहित कहते हैं कि रसायनिक खेती में भले ही पहले उत्पाद तैयार हो जाते हों लेकिन उनकी सेल्फ लाइफ ज्यादा नहीं होती। इससे मार्केट में ग्लट आने की स्थिति में किसान को नुकसान होता है। वहीं प्राकृतिक खेती से तैयार उत्पाद की सेल्फ लाइफ बेहतर है। ऐसे में बाजार में उत्पाद की अधिकता होने पर किसान इसे थोड़े दिन अपने पास रोक कर रख सकता है जिससे उसका नुकसान होने की संभावना कम हो जाती है।

> “जब घर पर रहकर ही अच्छी कमाई की जा सकती है तो शहरों की तरफ क्यों जाना? घर में परिवार का प्यार, शुद्ध हवा और ताजा खाना मिलता है जो हमें सेहतमंद रखता है।”

रोहित आस-पास के युवाओं को भी खेती की तरफ मोड़ रहे हैं। वह अभी तक 100 से ज्यादा लोगों को प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूक कर चुके हैं। रोहित कहते हैं कि खेती ही हमारे देश और प्रदेश की आर्थिकी का आधार है। ऐसे में युवा पीढ़ी को खेती की तरफ भी आना चाहिए ताकि हम स्वस्थ, पोषणयुक्त खाद्यान्न की उपलब्धता सुनिश्चित कर सबको सेहतमंद रखें और देश-प्रदेश की आर्थिकी में भी योगदान दें।

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन-5 कनाल (2.5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन-2 कनाल (1 बीघा)

फसलें-गेहूं, मक्की, मटर, गोभी, बैंगन, आलू, शिमला मिर्च

रसायनिक खेती-व्यय: 20,000 आय: 1,50,000

प्राकृतिक खेती-व्यय: 15,000 आय: 2,04,000

पोषणयुक्त खाद्यान की जरूरत को समझ पूरे समूह ने शुरू की प्राकृतिक खेती

आत्मा शक्ति समूह

महिलाओं और बच्चों में पोषण की कमी में हिमाचल प्रदेश के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। ऐसे में महिलाओं और बच्चों को पोषणयुक्त खाद्यान मुहैया हो सके इसके लिए भेडू महादेव ब्लॉक के देवी गांव के आत्मा शक्ति समूह ने प्राकृतिक खेती की ओर रूख किया है। आत्मा शक्ति समूह में गांव की 20 महिलाएं सदस्य हैं और सभी अपनी थोड़ी–थोड़ी भूमि में प्राकृतिक खेती कर रही हैं। दो साल पहले इस समूह की सभी सदस्यों ने खंड तकनीकी प्रबंधक से दो दिन का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। समूह की प्रधान निर्मला देवी ने बताया वर्तमान में खेती में रसायनों का प्रयोग बहुत अधिक बढ़ गया है। जिससे पोषण की कमी के साथ हमें स्वास्थ्य सबंधी कई दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए हमारे पूरे समूह ने रसायनरहित प्राकृतिक खेती करने का फैसला लिया।

> **“प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण पाने के बाद ही हमने प्रण ले लिया था कि अब अपने खेतों में रसायनों के प्रयोग को बिल्कुल कम कर देंगी। इसके अलावा हम सभी बहनों ने अब अपनी क्यारियों में रसायनों को त्यागकर प्राकृतिक खेती के आदानों को प्रयोग शुरू किया है। मेरे पति भी इस खेती विधि को अपनाने में मेरी पूरी मदद करते हैं।”**
>
> **-अनीता देवी**

समूह की सदस्य सिमरो देवी, सरोज देवी, तृप्ता देवी, अनीता देवी, सुदर्शना देवी, प्रिती, अंजना, जगतंबा, विंता देवी, सुमन, पूनम, कंचन, रमा, रक्षा, सुलोचना और मोनिका देवी भी इस खेती विधि को अपनाकर बहुत खुश हैं और अपने साथ अपने आस–पड़ोस और रिश्तेदारों को इस खेती विधि से जुड़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

> **“इस खेती विधि को अपनाने से हमारे परिवारवाले भी बहुत अधिक खुश हैं। मेरी सास जब गाय के गोबर और गोमूत्र के आदान बनाते मुझे देखती है तो वो मुझे इसे और खेतों में करने के साथ दूसरों को भी इसे सिखाने के लिए प्रेरित करती हैं। -रक्षा कुमारी”**

विस्तृत विवरण

प्राकृतिक खेती के तहत समूह की सदस्यों की जमीन–15 कनाल (7.5 बीघा)

फसलें–गेहूं, प्याज, खीरा, टमाटर, बैंगन, लहसुन, मटर, धान, मक्की, गोभी, मूली, शलगम, धनिया, पालक

परिवार की नाराजगी के बावजूद, पाई प्राकृतिक खेती में महारत

संसार चंद

सब्जियों की खेती के लिए प्रसिद्ध नगरोटा बगवां क्षेत्र में बिना रसायनों के सब्जियों की खेती करना संसार चंद के लिए एक चुनौती से कम नहीं था। प्राकृतिक खेती को अपनाने का मन बना चुके सनेहड़ गांव के संसार चंद के लिए यह चुनौती इसलिए भी बड़ी हो गई क्योंकि इसमें उन्हें परिवारवालों का साथ भी नहीं मिल पा रहा था। बावजूद इसके संसारचंद ने इन सब चुनौतियों से पार पाया और अब 5 कनाल भूमि पर सफलतापूर्वक प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

संसारचंद बताते हैं कि वह कई दशकों से रसायनिक खेती कर रहे हैं और जब उन्होंने 2020 में प्राकृतिक खेती करने का फैसला लिया तो उनके परिवारवालों ने इस बहुत विरोध किया। संसारचंद कहते हैं कि प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण पाने के बाद मैंने पहले एक कनाल भूमि में इसे करना शुरू किया। इसके बाद जैसे ही मुझे इसके अच्छे परिणाम देखने को मिले तो अब मैं 5 कनाल (2.5 बीघा) में इसे करना शुरू कर चुका हूं।

संसारचंद ने बताया कि मैं धीरे-धीरे से प्राकृतिक खेती का दायरा बढ़ा रहा हूं और बहुत जल्द अपनी पूरी भूमि को प्राकृतिक खेती के तहत लाउंगा। उन्होंने बताया कि मैंने अब पहले के मुकाबले रसायनों की खरीद आधी कर दी है। संसार चंद का कहना है कि रसायनिक खेती में सब्जियों में बहुत अधिक बीमारियां आ रही थी, लेकिन प्राकृतिक खेती में बीमारियां बहुत कम है।

संसारचंद ने बताया कि अभी भी मेरी कुछ जमीन में रसायनिक खेती से सब्जियों को उत्पादन हो रहा है, लेकिन इसमें झुलसा रोग देखने को मिला है, जबकि प्राकृतिक खेती में यह देखने को नहीं मिला। संसार चंद बताते हैं कि मेरे खेतों में उगी सब्जियों को खरीदने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं और इन्हें बाजार भाव से अधिक दाम चुकाकर खरीदकर जाते हैं।

> “मैंने अपने खेतों में मिश्रित खेती और आच्छादन से बहुत अच्छे परिणाम देखे हैं। मेरा मानना है कि सभी किसानों को इस खेती विधि को अपनाना चाहिए ताकि वे भी रसायनमुक्त इस खेती विधि के फायदों को जान सकें।”

विस्तृत विवरण

कुल जमीन - 20 कनाल (10 बीघा) प्राकृतिक खेती में जमीन - 5 कनाल (2.5 बीघा)

फसलें - खीरा, प्याज, टमाटर, बैंगन, लहसुन, मटर, गेहूं, धान, मक्की, गोभी, मूली, शलगम, धनिया, पालक

रसायनिक खेती - व्यय: 18,000 आय: 95,000

प्राकृतिक खेती - व्यय: 12,000 आय: 1,25,000

कृषि क्षेत्र में बड़ी क्रांति है प्राकृतिक खेती

अशोक कुमार

कृषि क्षेत्र में एक क्रांति धीरे – धीरे आकार लेने लगी है। यह क्रांति है प्राकृतिक खेती की जो किसानों के लिए सर्वोत्तम विकल्प है। यह कहना है बैजनाथ विकास खण्ड के किसान अशोक कुमार का जो 7 कनाल जमीन में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। अशोक कुमार ने बताया कि उनके क्षेत्र में मुख्यत: सब्जियों की खेती होती है। यहां का देसी खीरा अपने स्वाद और गुणवत्ता के लिए पूरे जिला भर में प्रसिद्ध है।

पहले अशोक कुमार एक कपड़ों की दुकान में काम करते थे लेकिन खेती करने की ललक उन्हें वापस खेतों में खींच लाई। उन्होंने रसायनिक खेती आरम्भ की मगर कुछ साल बाद इसे छोड़ जैविक खेती की ओर रुख कर लिया। आदानों की उच्च कीमत से उनकी लागत पहले के मुकाबले और बढ़ गई। 2 साल में जैविक खेती विधि में आशातीत सफलता न मिलने के बाद उन्होंने छोड़ दिया।

वर्ष 2019 में अशोक कुमार ने पालमपुर में पदम् श्री सुभाष पालेकर जी से प्राकृतिक खेती में 6 दिन का प्रशिक्षण लिया। इस प्रशिक्षण से उनमें नए उत्साह और नई उर्जा का संचार हुआ और घर आकर उन्होंने शिविर में बताए अनुसार आदान बनाना शुरू किया। आधा कनाल जमीन में विभिन्न आदानों प्रयोग कर अच्छे नतीजे लेने के बाद उन्होंने अपनी पूरी 7 कनाल (3.5 बीघा) जमीन में प्राकृतिक खेती शुरू कर दी।

पिछले 3 साल में अशोक कुमार ने अनाजों और सब्जियों में प्राकृतिक खेती से बहुत अच्छी पैदावार ली है। अशोक सब्जियों को स्थानीय तौर पर ही बेच रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस साल जब बाजार में गोभी 30 रूपए प्रति किलो भाव बिक रही थी तो उन्हें 20 रूपए प्रति किलो ज्यादा दाम मिला है। इसका कारण है गोभी का बेहतर स्वाद और गुणवत्ता।

> **“मैंने लाल चावल के 1 किलो बीज से 2-5 क्विंटल लाल चावल की पैदावार ली है जो बहुत अद्भुत है। मेरे अनुभव में न्यूनतम लागत में बंपर मुनाफा देने वाली एक ही खेती है-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती”**

अशोक ने कहा कि अगर प्राकृतिक खेती के उत्पाद को बेचने के लिए कोई पहल की जाती है तो इससे प्राकृतिक खेती की ब्रांड वेल्यू बनेगी। इससे और ज्यादा ग्राहक प्राकृतिक खेती उत्पादों की तरफ आकर्षित होंगे जो मार्केटिंग की समस्या को हल करने में सहायक होगा। अपनी खेती को बेहतर करने के लिए

अशोक अब प्राकृतिक खेती से तैयार बीज को संरक्षित कर रहे हैं ताकि स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल तैयार बीज से उत्पादन को और बढ़ाया जा सके।

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन – 7 कनाल (3.5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन – 7 कनाल (3.5 बीघा)

फसलें – गेहूं, मक्की, मटर, गोभी, आलू, खीरा, लाल चावल

रसायनिक खेती – व्यय: 4,000 आय: 78,000

प्राकृतिक खेती – व्यय: 2,000 आय: 1,00,000

बीमारियों से तंग आकर छोड़ी रसायनिक खेती, अब प्राकृतिक खेती कर पाया मुकाम

शोभा देवी

सब्जियां उगाकर परिवार का भरण – पोषण करने वाली महिला किसान शोभा देवी के परिवार के लोग जब आए दिन बीमार रहने लगे तो उन्होंने खेतों में प्रयोग होने वाले रसायनों को बंद करने का फैसला लिया। शोभा देवी बताती हैं कि सब्जियों में अच्छी पैदावार और कीटों से रक्षा के लिए वे इसमें जमकर खादों और कीटनाशकों को प्रयोग करती थी। जिसका असर मेरे पति के स्वास्थ्य और अन्य परिवारवालों की सेहत पर होने लगा। इसलिए मैंने अपने परिवार और उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए जैविक खेती करना शुरू किया। लेकिन जैविक खेती में अधिक मात्रा में केंचुआ खाद और अन्य बाजार आधारित उत्पादों के प्रयोग के बावजूद उत्पादन कम हो गया जिससे मेरा नुकसान कई गुणा बढ़ गया।

शोभा देवी को प्राकृतिक के बारे में जानकारी मिली और उन्होंने 2018 में ही सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण इसके जन्मदाता सुभाष पालेकर से पालमपुर विश्वविद्यालय में लिया।

शोभा देवी बताती हैं इस खेती विधि के पहले ही साल में उनके उत्पादन में किसी प्रकार की कमी नहीं आई है। वे बताती हैं कि जहां पहले रसायनों और खादों के लिए हजारों रुपए खर्च करने पड़ते थे वे भी बच रहे हैं साथ ही रसायनमुक्त होने के चलते बाजार में उनकी सब्जियां जल्दी और अच्छे दामों में बिक रही हैं।

शोभा देवी ने कहा कि इस खेती से जुड़ने के बाद उन्हें नई पहचान मिली और वो आत्मविश्वास से भरी हुई हैं। शोभा देवी प्राकृतिक खेती के बारे में बड़े – बड़े मंचों में अपने अनुभव साझा कर चुकी हैं। इसके अलावा वे अपने साथ क्षेत्र के अन्य किसानों को भी प्राकृतिक खेती से जोड़ने का काम कर रही हैं। शोभा देवी इतने उत्साह से भरी हैं कि अब उन्होंने पॉलीहाउस में भी प्राकृतिक खेती का मॉडल खड़ा कर दिया है। शोभा देवी अपने क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरणाश्रोत बन चुकी हैं और उनकी देखा – देखी में क्षेत्र के अन्य किसान भी इस खेती विधि से जुड़ रहे हैं।

> “मैं किसानों खासकर महिला किसानों को अपने खेतों में लाकर प्राकृतिक खेती का मॉडल दिखाती हूं और इस खेती विधि से हुए लाभों के बारे में जानकारी देती हूं।”

विस्तृत विवरण

कुल जमीन - 23 कनाल (11.5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन - 20 कनाल (10 बीघा)

फसलें - मटर, फूलगोभी, मूली, भिंडी, फ्रासबीन, घीया, गेहूं, खीरा, गेंदा, आलू

रसायनिक खेती - व्यय: 8,000 आय: 70,000

प्राकृतिक खेती - व्यय: 3,000 आय: 80,000

45 बीघा बंजर भूमि पर बागवानी का मॉडल खड़ा कर लोगों के लिए प्रेरणा बने कर्नल राजेश

कर्नल राजेश शर्मा

कांगड़ा जिला की कमलोटा पंचायत के रिटायर कर्नल राजेश शर्मा आज के दौर में रोजगार के गांव को छोड़ शहरों की ओर पलायन करने वाले बेरोजगार युवाओं के लिए प्रेरणाश्रोत बनकर उभरे हैं। कर्नल राजेश शर्मा ने दशकों से बंजर पड़ी अपनी 45 बीघा भूमि में बागवानी का उत्कृष्ट मॉडल खड़ा कर सबके सामने एक उदाहरण पेश किया है। कर्नल शर्मा ने अपनी पुश्तैनी जमीन में बागवानी का ऐसा मॉडल खड़ा किया है जिसमें उन्हें साल के 12 माह आय होती रहेगी। उन्होंने अपने बाग में 25 तरह के फल और 10 तरह की सब्जियों को लगाया है। उन्होंने बताया कि मैंने प्राकृतिक खेती विधि से भी पौधों की देखभाल शुरू की है और वे किसी भी प्रकार के रसायन का प्रयोग नहीं कर रहे हैं।

कर्नल राजेश शर्मा ने गर्म इलाके में होने वाले सेब के 141 पौधे, अनार के 40, आड़ू के 50, गलगल के 236, चीकू के 5, बैर एप्पल के 235, अखरोट, नींबू, कटहल, आम, अमरूद, केला, आंवला, सीताफल, लीची, पपीता, बादाम, पीकानट, जामुन, नाशपाती, शहतूत, आंवला, एलोवेरा, लौंग, इलायची, गलगल और संतरे के पौधे लगाए हैं। इसके अलावा वे गेहूं, चना, मक्की, मटर, सरसों, प्याज, मूली और एग्जॉटिक सब्जियों की खेती भी कर रहे हैं।

कर्नल शर्मा ने कहा कि प्राकृतिक खेती विधि में पौधों की बढ़वार बहुत अच्छी हो रही है और पौधों की मृत्यूदर शून्य के बराबर है। उन्होंने कहा कि जिस स्थान में उनका बागीचा है वहां पानी की उपलब्धता थोड़ी कम है, लेकिन प्राकृतिक खेती विधि में इसका असर देखने को नहीं मिला है।

> **“प्राकृतिक खेती विधि को सभी तरह की सब्जियों और फलों में आसानी से किया जा सकता है। मैंने इसका मॉडल खड़ा किया है और लोग इसे देखने के लिए मेरे खेत-बागीचे में आ सकते हैं।”**

प्राकृतिक खेती विधि में हम एक साथ कई फसलें लगाते हैं। जिसमें हमें थोड़े-थोड़े समय में आय होती रहती है। मेरे फार्म में पड़ोस के गांव के लोग देखने के लिए आते हैं और जब उन्हें पता चलता है कि इसमें मैंने किसी भी तरह के रसायन का प्रयोग नहीं किया है तो वे इस बात से हैरान हो जाते हैं। मैं यहां आने वाले सभी किसानों को इस खेती विधि से जुड़ने के लिए कहता हूं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन–90 कनाल (45 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन–90 कनाल (45 बीघा)

फसलें व फल–मटर, फूलगोभी, मूली, भिंडी, फ्रासबीन, गेहूं, खीरा, आम, संतरे, अनार, सेब और अन्य फल

जिस बागीचे को काटने की थी तैयारी प्राकृतिक खेती ने लाई उसमें नई जान

मनजीत कौर

हम अगर अपने आस – पास गौर करें तो देखेंगे कि खेती में पुरूषों का ही वर्चस्व है। उनकी सफलता की अनेकों कहानियां हमने पढ़ी या देखी होंगी। ऐसे में कोई महिला खेती के बूते पहचानी जाए तो यह अपने आप में अनूठी बात है। कांगड़ा जिला के इंदौरा विकास खण्ड की महिला किसान मनजीत कौर ने खेती से अपनी पहचान कायम की है और जिला भर के किसानों के लिए प्रेरणा बनकर उभरी हैं।

पदम् श्री सुभाष पालेकर जी से पालमपुर में प्रशिक्षण लेकर प्राकृतिक खेती की शुरूआत करने वाली मनजीत ने खेती – बागवानी में कई उतार चढ़ाव देखे हैं। उन्होंने बताया कि जब वह पुरानी पद्धति से खेती कर रही थी तो गिरता उत्पादन चिंता का बड़ा विषय था। एक समय तो ऐसा भी आया कि 12 कनाल (6 बीघा) के संतरे का बागीचा 5 – 10 हजार में ठेके पर जाने लगा। ऐसे में वह पूरा बागीचा काटने का सोच रही थी लेकिन किचन – गार्डन में प्राकृतिक खेती के सफल प्रयोग ने उन्हें बागीचे में भी इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

आज उसी संतरे के बागीचे का ठेका 60 हजार रूपए में जा रहा है। मनजीत ने बताया कि प्राकृतिक खेती से उनका बागीचा फिर से जी उठा है। पहले संतरा पकने तक ही काफी फल नीचे गिर जाते थे। अब इस स्थिति से छुटकारा मिल गया है और उन्होंने नए पौधे भी लगाए हैं। बागीचे के साथ खेत में भी मनजीत अंतर फसलें ले रही हैं। पिछले तीन साल में विविध फसलों के साथ वह 32 कनाल भूमि को प्राकृतिक खेती के अधीन ला चुकी हैं।

> **“प्राकृतिक खेती में शुरुआत के दौरान गांव वालों के ताने सुनकर भी मनजीत अडिग रही और इस खेती से चमत्कार कर दिखाया। इनका खेत-बागीचा अब बाकि किसानों के लिए प्रेरणास्त्रोत बन रहा है।**
> **- सपना कुमारी, बीटीएम”**

मनजीत प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत प्रशिक्षु किसान विशाल कुमार को इस खेती के गुर सिखा रही हैं। विशाल ने बताया कि खेती और बागवानी दोनों में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण हासिल कर वह खुश हैं और घर जाकर इस खेती को अवश्य अपनाएंगे। प्रशिक्षु किसान को इस विधि में निपुण करने के साथ

मनजीत राधे श्याम महिला समूह को भी इस खेती की तरफ मोड़ रही हैं। आस-पास के क्षेत्रें में इस विधि के प्रसार हेतु वह 28 से ज्यादा प्रशिक्षण शिविर लगा चुकी हैं।

> **“मेरे बागीचा घर से दूर है इसलिए मैं स्कूटी से जीवामृत और अन्य आदान वहां लेकर जाती हूं। आते-जाते समय लोग मुझे इस विधि के बारे में पूछते हैं और बागीचे में भी आते हैं।”**

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन-32 कनाल (16 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन-32 कनाल (16 बीघा)

फसलें व फल-मटर, टमाटर, गेहूं, मक्की, गेहूं, सरसों, संतरा व आम

रसायनिक खेती-व्यय: 15,000 आय: 53,500

प्राकृतिक खेती-व्यय: 6,000 आय: 50,000

जो देते थे ताने वही लगे प्राकृतिक खेती सीखने के लिए आने

नरेंद्र सिंह

जब मैं खेतों में जीवामृत एवं बाकि खेती आदानों का छिड़काव करता था तो लोग मुझे रोकते थे। लोग कहते थे कि यह क्या बदबूदार चीजें खेतों में डाल रहे हो! तरह-तरह के ताने सुनने को मिलते और मन उचटने लगता था। मगर पालेकर जी की बातें याद आती थी और मैं फिर से खेती में जुट जाता था। मेरे धैर्य, प्राकृतिक खेती पर विश्वास और इस खेती के परिणामों के चलते अब वही लोग प्राकृतिक खेती सीख रहे हैं। यह प्रत्यक्ष अनुभव है सुनेट पंचायत के किसान नरेंद्र सिंह का जो प्राकृतिक खेती के अग्रदूत बनकर उभरे हैं।

नरेंद्र ने बताया कि उन्होंने 2018 में पालमपुर में पदम् श्री सुभाष पालेकर जी से प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया। इस 6 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर ने खेती के प्रति बने मिथकों और भ्रांतियों को तोड़ा और नरेंद्र ने इस पर्यावरण हितैषी विधि को अपनाने की ठान ली। शिविर से घर वापस आकर उन्होंने पहाड़ी गाय खरीदी और घर के साथ लगते खेत में इस विधि का प्रयोग शुरू कर दिया। अच्छे परिणाम मिलने पर उन्होंने धीरे-धीरे प्राकृतिक खेती के अधीन दायरा बढ़ा दिया।

नरेंद्र ने मौसमी सब्जियों को अपनी दुकान के माध्यम से बेचना शुरू किया है। उन्होंने बताया कि जब आस-पास के लोगों ने प्राकृतिक खेती से तैयार इन सब्जियों को खरीदा तो इनकी गुणवत्ता देखकर कुछ लोग पक्के खरीददार बन गए हैं। शादी और अन्य समारोह के लिए लोग सब्जियों की बुकिंग भी देने लगे हैं। इससे नरेंद्र का हौसला बढ़ा है और अब साथी किसान भी उनसे यह विधि सीखने का आग्रह कर रहे हैं। नरेंद्र प्राकृतिक खेती के प्रसार को ध्येय बनाकर आस-पास के क्षेत्रों में प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से लोगों को इस विधि के प्रति जागरूक कर रहे हैं। अब तक वह 1,000 से ज्यादा किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूक कर चुके हैं।

> “‘प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान’ योजना की ख्याति बढ़ रही है। लोग खुद प्राकृतिक खेती के बारे में जानने लगे हैं और अब उन्हें विस्तार से इसके बारे में नहीं बताना पड़ता। बस उनके सवालों के जबाब और प्राकृतिक खेती आदान बनाने के लिए घटकों के विकल्प के बारे में बताना पड़ता है।”

नरेंद्र का पूरा परिवार प्राकृतिक खेती में उनका सहयोग कर रहा है। वह कहते हैं कि खाद और कीटनाशकों के चलते पहले लोग बच्चों को खेती से दूर रखने लगे थे। लेकिन रसायनरहित यह विधि हमारी आने वाली पीढ़ी को दोबारा खेती से जोड़ने में सहायक होगी। नरेंद्र की आगामी योजना अपने क्षेत्र को रसायनमुक्त कर प्राकृतिक खेती से बागवानी में नए प्रयोग करने की है।

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन–16 कनाल (8 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन–15 कनाल (7.5 बीघा)

फसलें–सरसों, मक्की, गेहूं, मटर, गोभी

रसायनिक खेती–व्यय: 40,000 आय: 1,50,500

प्राकृतिक खेती–व्यय: 6,000 आय: 1,75,000

पहले कीटनाशकों से बच्चों को रखते थे दूर, अब बच्चे बनाते हैं खेती आदान

बीर सिंह

खेती रसायनों के इतने घातक दुष्परिणाम हैं कि मैं पहले बच्चों को इनसे दूर रखता था और उन्हें खेती से भी दूर रख रहा था लेकिन अब मेरे बच्चे ही खेती आदान बनाते हैं। इस बदलाव का कारण है सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती। यह कहना है कांगड़ा जिला के इंदौरा ब्लॉक के थाथ गांव निवासी बीर सिंह का जो 2019 से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

बीर सिंह ने बताया कि विदेश से वापिस लौटकर उन्होंने खेती की शुरूआत की लेकिन गिरती गुणवत्ता से वह चिंतित थे। सब्जियों के साथ मुख्यत: संतरे की खेती करने वाले इस किसान ने वह समय भी देखा जब कम आकार के कारण उसे 5 से 7 रूपए प्रति किलो की दर से संतरा बेचना पड़ा। बीर सिंह ने इस स्थिति को बदलने की ठानी और इंटरनेट से शुरूआती जानकारी के बाद विधिवत प्रशिक्षण लेकर प्राकृतिक खेती की शुरूआत की ।

प्राकृतिक खेती से बीर सिंह को काफी फायदा हुआ। उन्होंने 6 कनाल (3 बीघा) भूमि पर संतरे और सब्जियों से प्राकृतिक खेती की शुरूआत की जिससे उन्हें अच्छे परिणाम मिले। वर्तमान में वह 42 कनाल (21 बीघा) भूमि को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित कर चुके हैं। इस वर्ष उन्होंने मिश्रित खेती में बंसी गेहूं, चना, सरसों, बैंगन, मटर, संतरे, नींबू और किन्नू की खेती की है। बंसी गेहूं और चने से ही उन्होंने 15 हजार रुपये का मुनाफा कमाया है।

पशुचारे के लिए बरसीम पर भी बीर सिंह ने प्राकृतिक खेती विधि को अपनाया जिससे क्षेत्र में बरसीम पर बीमारी आने के बावजूद भी उनके खेतों में कोई नुकसान नहीं हुआ। बीर सिंह आसपास के कई किसानों को प्राकृतिक खेती के घटक बनाना सिखाते हैं और अपने संसाधन भंडार से तैयार किए विभिन्न घटक भी देते हैं ।

> “क्षेत्र के किसानों को प्राकृतिक खेती की तरफ मोड़ने के लिए मैं यूट्यूब और फेसबुक का सहारा ले रहा हूं । मेरे फेसबुक पेज और यूट्यूब वीडियो में मेरे बच्चे शौर्य व श्रुति भी होते हैं जो इस खेती के बारे में बताते हैं।”

बीर सिंह का अगला मकसद सुभाष पालेकर जंगल मॉडल बनाना है जिसके लिये वह अपनी जमीन तैयार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वह विविध फल-सब्जी और अनाज इस विधि से उगाएंगे ताकि शुद्ध खान-पान की उपलब्धता को बेहतर किया जा सके।

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन-42 कनाल (21 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन-42 कनाल (21 बीघा)

फसलें व फल-गेहूं, बैंगन, भिंडी, टमाटर, मटर, चना, मक्की, सरसों, बरसीम, संतरा, नींबू, किन्नू

रसायनिक खेती-व्यय: 40,000 आय: 2,00,000

प्राकृतिक खेती-व्यय: 10,000 आय: 2,00,000

खुद विपणन व्यवस्था तैयार कर उत्पाद बेच रही सिमरता

सिमरता देवी

आर्थिक, भौगोलिक और मौसम की चुनौतियों से पार पाकर किसान फसल उत्पादन करता है और उसके बाद शुरू होती है बाजार के लिए भागदौड़। किसान की मेहनत और आधा वक्त बाजार खोजने और अपनी फसल को बेचने में लग जाता है। मगर कुछ किसान ऐसे भी हैं जिन्हें बाजार की चिंता नहीं है और वह घर बैठे ही अपनी फल – सब्जी व अनाज बेच रहे हैं। धर्मशाला विकास खण्ड के बनवारा गांव की सिमरता देवी भी ऐसी ही किसान हैं। सिमरता देवी इस बदलाव का श्रेय प्राकृतिक खेती को देती हैं।

सब्जियों मुख्यत: मटर, गोभी और प्याज की व्यावसायिक खेती करने वाली सिमरता देवी ने 2019 में प्राकृतिक खेती का दामन थामा। 5 कनाल भूमि (2.5 बीघा) में सब्जियों पर प्राकृतिक खेती से सफल परिणाम मिलने के बाद उन्होंने गेहूं और मक्की पर भी इस विधि को अपनाया। वर्तमान में यह महिला किसान अपने पति के साथ मिलकर अपनी पूरी जमीन पर प्राकृतिक खेती कर रही है।

> “हमारा परिवार दशकों से खेती कर रहा है। यह पहली ऐसी विधि है जिसमें किसान और खरीददार दोनों खुश तथा संतुष्ट है। जो ग्राहक एक बार खरीददारी करता है वह दोबारा जरूर आता है। हम इस विधि से बेहद खुश हैं और साथी किसानों को भी इसकी तरफ मोड़ रहे हैं- सिमरता के पति कुलदीप”

प्राकृतिक खेती से उत्पादों की गुणवत्ता में आशातीत सुधार आया है जिसके चलते लोग सिमरता देवी को प्याज, लहसुन, गेहूं का एडवांस आर्डर देने लगे हैं। आस – पास के लोग उनके खेतों को देखने आते हैं और परिणामों से प्रभावित होकर खरीददारी भी करते हैं।

> “ग्राहक बाजार भाव से 5 रुपए प्रति किलो ज्यादा दाम देकर मेरे खेत से ही उत्पाद ले जा रहे हैं। इससे बाजार जाने की जरूरत खत्म हो गई है और समय की भी बचत हो रही है। -सिमरता”

सिमरता देवी 20 महिला सदस्यों वाले शिव शक्ति महिला समूह से भी जुड़ी हैं और इन्हें प्राकृतिक खेती के गुर सिखा रही हैं। इनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से समूह की सभी महिलाएं इस खेती को 10 कनाल (5 बीघा) भूमि पर कर रही हैं। सिमरता देवी अब अपनी पंचायत को रसायनमुक्त करने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रही हैं ताकि प्रदेश को रसायनमुक्त करने का सपना साकार किया जा सके।

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन – 15 कनाल (7.5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन – 15 कनाल (7.5 बीघा)

फसलें – मक्की, गेहूं, मटर, प्याज, लहसुन, गोभी

रसायनिक खेती – व्यय: 40,000 आय: 2,00,000

प्राकृतिक खेती – व्यय: 10,000 आय: 2,00,000

प्राकृतिक खेती का असर: बागीचे में सफलता के बाद पट्टे पर खेती के लिए ली जमीन

अश्वनी कुमार

आम के बागीचे में प्राकृतिक खेती के जो परिणाम मिले उसने आश्चर्यचकित कर दिया। अकसर तेला बीमारी के प्रकोप से मेरे आम खराब हो जाते थे लेकिन प्राकृतिक खेती में दशपर्णी अर्क के प्रयोग से यह बीमारी पूरी तरह नियंत्रित हो गई है। अब मैंने बाकि फसलों को भी इस विधि से उगाने की ठान ली है। यह कहना है सूखाग्रस्त नूरपूर क्षेत्र के काथल निवासी किसान अश्वनी कुमार का जो पढ़ाई के बाद से खेती में जुटे हुए हैं।

आम के व्यापार को अपनी आजीविका बनाकर अश्वनी पारंपरिक तरीके से खेती कर रहे थे। इसी बीच 2018 में पालमपुर विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती के शिविर का हिस्सा बनकर उन्होंने पदम् श्री सुभाष पालेकर जी से 6 दिन तक इस खेती के गुर सीखे। घर आकर उन्होंने पड़ोसी से गोबर – गोमूत्र लेकर अपने 3 कनाल (1.5 बीघा) के आम के बागीचे में ट्रायल शुरू किया। लगभग 60 पौधों पर विभिन्न आदानों के प्रयोग से उन्हें अच्छे परिणाम मिले। इसके बाद उन्होंने प्राकृतिक खेती को पूरी तरह अपना लिया। उन्होंने बताया कि पहले आम पर उनका खर्च 15 हजार आ रहा था अब यह कम होकर 6 हजार रह गया है।

प्राकृतिक खेती के परिणामों से उत्साहित होकर अश्वनी कुमार ने 10 बीघा जमीन लीज पर ली है। इस जमीन पर वह सब्जियों की खेती करने की योजना बनाकर काम कर रहे हैं। सब्जियों की खेती की रूपरेखा बनाने और उसमें हाथ बंटाने के लिए उन्होंने अपने यहां एक प्रशिक्षु किसान दिनेश को भी रखा है। अश्वनी ने बताया कि खेती में असली अनुभव देखने की बजाए खुद करके आता है। इसलिए वह अपने प्रशिक्षु किसान को प्राकृतिक खेती के गुर सिखाने के साथ उसे प्रयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित कर रहे हैं।

> **“कोई भी चीज सीखने के लिए एक स्वस्थ माहौल की जरुरत होती है। मैं बेहद खुश हूं कि मुझे अच्छे माहौल में प्राकृतिक खेती के बारे में सीखने को मिल रहा है। वापस जाकर मैं अपने खेत में इस विधि को अपनाऊंगा और साथी किसानों को भी प्रेरित करूंगा। - दिनेश कुमार, प्रशिक्षु किसान”**

अश्विनी कुमार बागवानी के साथ खेती पर भी अब ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। सब्जियों की खेती के साथ वह अपने 25 कनाल के आम के बागीचे को इस विधि में ला रहे हैं। इसके लिए वह साहीवाल नस्ल की गाय खरीद

चुके हैं ताकि बड़े स्तर पर आदान की जरूरत को पूरा किया जा सके। अपने आस – पास की 3 पंचायतों में वह इस विधि का प्रचार – प्रसार भी कर रहे हैं।

> **“मैंने इस खेती विधि को फसलों और फलों में करके देखा है इसके बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। मेरी सभी किसानों को सलाह है कि वे इस खेती विधि को प्रयोग के तौर पर अवश्य शुरू करें।”**
>
> **- अश्वनी कुमार**

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन – 25 कनाल (12.5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन – 13 कनाल (6.5 बीघा)

फसलें व फल – मक्की, गेहूं, मटर, प्याज, लहसुन, गोभी, आम व संतरा

रसायनिक खेती – व्यय: 15,000 आय: 53,500

प्राकृतिक खेती – व्यय: 6,000 आय: 50,000

बंजर भूमि को प्राकृतिक खेती से बनाया उर्वरा, उगा रहे पोषणयुक्त खाद्यान

राजिंदर कंवर

जहां कई लोग खेती योग्य जमीन को बढ़ती लागत और मौसमी बदलावों से आ रही जटिलताओं की वजह से बंजर छोड़ रहे हैं वहीं कुछ किसान बंजर भूमि को भी खेती योग्य बना इसमें विविध फसलें लगा रहे हैं। ऐसा ही एक उदाहरण पेश किया है कांगड़ा जिला के चंचेहड़ गांव निवासी किसान राजिंदर कंवर ने जिन्होंने 75 साल की उम्र में इस चुनौतीपूर्ण काम को पूरा किया।

धुन के पक्के राजिंदर कंवर ने बताया कि बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने का काम सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती ने आसान किया है। राजिंदर ने बताया कि वर्ष 2019 में उन्होंने झांसी में पालेकर जी से प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 6 दिन के प्रशिक्षण में प्राकृतिक खेती के विभिन्न आदानों के निर्माण, प्रयोग, कीट–रोग प्रबंधन आदि को सीखने के बाद वह घर लौटे। अपनी खेती वाली जमीन में जब उन्होंने प्राकृतिक खेती से सफलता प्राप्त की तो इससे उनका हौसला बढ़ गया। फिर उन्होंने बंजर भूमि को खेती लायक बनाने की चुनौती स्वीकारी और इसमें भी सफलता हासिल की।

राजिंदर ने बताया कि शिविर से जब घर लौटे तो उन्होंने साहीवाल नस्ल की गाय खरीदी। गाय के गोबर–मूत्र और स्थानीय वनस्पतियों से आदान बनाकर उन्होंने खेतों में इस्तेमाल शुरू कर दिया। चूंकि उन्होंने कभी रसायन खेतों में नहीं डाले तो उन्हें जल्दी ही अच्छे नतीजे मिल गए। इसके बाद वह और उत्साह से खेतों में जुट गए।

राजिंदर ने बताया कि उन्होंने इस साल प्राकृतिक खेती से 3 तरह की गेहूं उगाई है जिसमें स्थानीय किस्म के साथ, बंसी और काली गेहूं भी सम्मिलित है। मिश्रित खेती के तौर पर उन्होंने गेहूं के साथ सरसों और मटर की फसल ली है। इस साल बारिश कम होने से पारंपरिक खेती में उत्पादन कम हुआ है लेकिन राजिंदर के खेतों में गेहूं की अच्छी पैदावार हुई है। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती के इस चमत्कार से आस–पड़ोस के किसान भी आश्चर्य में हैं।

> **“प्राकृतिक खेती में स्थानीय बीजों का बड़ा महत्व है। मैं अपनी खेती में स्थानीय बीजों का ही इस्तेमाल कर रहा हूं। इससे मेरी पैदावार और फसल गुणवत्ता बाकि किसानों के मुकाबले बेहतर हुई है।”**

राजिंदर गांव के अन्य किसानों और युवाओं को प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। वह कहते हैं कि जब हमारा खान-पान शुद्ध और रसायनरहित होगा तभी हम एक स्वस्थ जीवन जीएंगे। आज के भागदौड़ भरे जमाने में अच्छे, पोषणयुक्त खाने का महत्व और बढ़ गया है। जब किसान रसायनरहित उगाएगा तो उसका परिवार और आस पड़ोस ही नहीं देश भी सेहतमंद होगा।

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन-20 कनाल (10 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन-16 कनाल (8 बीघा)

फसलें-गेहूं, भिंडी, चना, मटर, टमाटर, सरसों, घीया, तोरी, खीरा

प्राकृतिक खेती-व्यय: 3,000 आय: 25,0000

प्राकृतिक खेती के प्रसार को गति दे रही श्रेष्ठा देवी

श्रेष्ठा देवी

पहाड़ी खेती में महिलाओं की बड़ी और अहम भूमिका है। पुरूषों के मुकाबले महिलाएं खेतों में ज्यादा नज़र आती हैं। ऐसे में किसी भी नई पहल से महिलाओं को जोड़ना उसके प्रसार को गति देता है और किसान समुदाय में उसकी स्वीकार्यता बढ़ाता है। ऐसा ही कुछ कांगड़ा जिला में देखने को मिला जहां सरूर गांव की महिला किसान श्रेष्ठा ने प्राकृतिक खेती को अपनाया और इस खेती के प्रसार में भी अग्रणी बनकर उभरी हैं।

लम्बागांव विकास खण्ड की किसान श्रेष्ठा देवी ने बताया कि 2020 में उन्होंने पंचायत स्तर के शिविर में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने खेतों में देसी गाय के गोबर–गोमूत्र और स्थानीय वनस्पतियों से बनाए आदान इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। उन्होंने बताया कि जिन खेतों में वह प्राकृतिक खेती कर रही थी उसी के साथ पड़ोसियों के खेत भी थे जहां वे रसायन आधारित खेती कर रहे थे। उन्होंने दोनों खेतों की तुलना की और देखा कि प्राकृतिक खेती से फसलों की बढ़वार, पैदावार की गुणवत्ता और स्वाद रसायनिक से बेहतर था।

प्राकृतिक खेती के परिणामों को प्रत्यक्ष तौर पर देखने के बाद उन्होंने गेहूं, मक्का और सब्जियों के साथ फलों में भी प्राकृतिक खेती को अपना लिया। अब सभी फसलों में उन्हें अच्छे नतीजे मिल रहे हैं तथा परिवार भी इस खेती में सहयोग कर रहा है। श्रेष्ठा देवी अपने उत्पादों को स्थानीय स्कूल के अध्यापकों तथा अन्य स्टॉफ को बेच रही हैं। इससे उनकी बाजार समस्या भी हल हो गई है।

श्रेष्ठा देवी आस–पास की 3 पंचायतों के किसानों को भी प्राकृतिक खेती से जोड़ रही हैं। इसके लिए वह शिविरों तथा ग्राम सभाओं में प्राकृतिक खेती की जानकारी दे रही हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा किसान इस विधि को अपना सकें। प्राकृतिक खेती के प्रसार के साथ श्रेष्ठा देवी अब फलों की खेती पर ध्यान दे रही हैं ताकि आर्थिकी को बढ़ाया जा सके।

> **“अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर मुझे नौणी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में जाने का मौका मिला। इस कार्यशाला में प्रदेशभर की महिला किसानों के अनुभव सुने। इससे नए उत्साह और नई उर्जा का संचार हुआ। अब मैं और मेहनत से काम कर रही हूं ताकि प्राकृतिक खेती आंदोलन को गति दे सकूं।”**

विस्तृत विवरण

कुल ज़मीन–10 कनाल (5 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन–6 कनाल (3 बीघा)

फसलें व फल–गेहूं, मक्की, मटर, गोभी, बैंगन, आलू, लीची

रसायनिक खेती–व्यय: 2,000 आय: 20,000

प्राकृतिक खेती–व्यय: 300 आय: 25,000

हिमाचल की बागवानी की दशा और दिशा को बदल देगा ड्रैगन फ्रूट

जीवन सिंह राणा

फलों की टोकरी कहे जाने वाले हिमाचल प्रदेश में सेब बागवानी ने किसान–बागवानों की आर्थिकी में बडा बदलाव लाया। अब ड्रैगन फ्रूट प्रदेश के किसान–बागवानों की आर्थिक समृद्धि के लिए वरदान साबित हो सकता है। ड्रैगन फ्रूट की शुरूआत कांगड़ा जिला के नगरोटा सूरियां ब्लॉक के किसान जीवन सिंह राणा ने की है। शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त जीवन सिंह राणा ने ड्रैगन फ्रूट की खेती करने का क्रांतिकारी कदम उठाकर किसान बागवानों के लिए आशा की नई किरण दिखाई है। जीवन सिंह राणा ने अपनी 30 कनाल (15 बीघा) भूमि में से 6 कनाल भूमि में ड्रैगन फ्रूट के 500 पौधों का बाग लगाया है। प्राकृतिक खेती विधि से वर्ष 2020 में लगाए गए इस बाग में 2021 में फ्रूट के सैंपल आ गए थे और इस साल इसमें अच्छी पैदावार होने की आशा जीवन सिंह राणा जता रहे हैं।

राणा ने बताया कि उन्होंने पंजाब के बरनाला से 25 लाख रूपये खर्च कर ड्रैगन फ्रूट के पौधे लाए थे और इसमें प्राकृतिक खेती विधि में लगाए आदानों का प्रयोग कर रहे हैं। प्राकृतिक खेती विधि से पौधे बड़ी अच्छी तरह से बढ़ रहे हैं। उन्होंने आशा जताई है कि यह बाग उन्हें तीसरे साल के बाद 10 से 15 लाख रूपये की आय सालाना देंगे। जीवन सिंह ने बताया कि प्राकृतिक खेती विधि में पानी का कम प्रयोग होता है और मिश्रित खेती के सिद्धांत को अपनाने से जब तक ड्रैगन फ्रूट में पैदावार नहीं मिल रही है, तब तक मुझे ड्रैगन फ्रूट के पौधों के बीच में सब्जियों से आय हो रही है।

नवोन्वेषी किसान जीवन सिंह राणा ने ड्रैगन फ्रूट के बाग के अलावा अपनी 24 कनाल भूमि में प्राकृतिक खेती विधि से सब्जियां, अनाज फसलें और आम, संतरा, जामुन और सेब के पौधे लगाए हैं। जीवन सिंह राणा बताते हैं कि उनके क्षेत्र में सिंचाई की उचित व्यवस्था नहीं है और कम पानी की उपलब्धता के बावजूद भी उन्हें प्राकृतिक खेती विधि से फल–सब्जियों में बहुत अच्छी बढ़वार मिल रही है।

> “इस खेती विधि के सहफसल सिद्धांत से किसान-बागवानों का लाभ बढ़ गया है। अब लोग खेतों और बागों में सहफसलों के माध्यम से अतिरिक्त आय पा रहे हैं।”

प्राकृतिक खेती में जीवन सिंह राणा के पुत्र आशीष राणा जो कि एक सिविल इंजीनियर हैं वह भी भरपूर साथ दे रहे हैं। जीवन सिंह प्राकृतिक खेती से भिंडी, फ्रासबीन, लौकी, खीरा, मूली, गोभी और मटर सब्जियां उगा रहे हैं। उनका कहना है कि लोग उनके प्राकृतिक खेती मॉडल पर लगे बाग और सब्जियों को देखने के लिए आ रहे हैं और इस खेती विधि को अपना रहे हैं। वह कहते हैं कि जो लोग ड्रैगन फ्रूट का बाग देखने के लिए आते हैं वे उन्हें इसका बाग लगाने के लिए प्रेरित करने के साथ प्राकृतिक खेती विधि से इस बाग को कैसे लगाया जा सकता है इसके बारे में पूरी जानकारी देते हैं। इसके चलते क्षेत्र के कई अन्य किसान भी प्राकृतिक खेती को अपना रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन–30 कनाल (15 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन–30 कनाल (15 बीघा)

फसलें व फल–मटर, फूलगोभी, मूली, भिंडी, फ्रासबीन, गेहूं, खीरा, ड्रैगन फ्रूट, आम

रसायनिक खेती–व्यय: 12,000 आय: 65,000

प्राकृतिक खेती–व्यय: 3,000 आय: 75,000

पहले सरहद पर देश सेवा, अब मिटट्ी की सेवा में जुटे सेवानिवृत्त फौजी

सुरेश कुमार

सरहद में देश की रक्षा के बाद अब सुरेश कुमार मिट्टी की सेवा और रक्षा में जुट गए हैं। धर्मशाला ब्लॉक के डगवार पंचायत के सुरेश कुमार रसायनों को त्यागकर मिट्टी की सेवा करने का प्रण लिया है। सुरेश पिछले 3 सालों से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं और अभी तक क्षेत्र के 200 से अधिक किसानों को रसायन रहित प्राकृतिक खेती से जोड़ चुके हैं। सुरेश ने प्राकृतिक खेती के जनक पदम्श्री सुभाष पालेकर से भरतपुर, राजस्थान में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इसके बाद उन्होंने एक कनाल में इस खेती विधि को प्रयोग के तौर पर शुरू किया था और दूसरे साल उन्होंने अपनी पूरी 15 कनाल (7.5 बीघा) भूमि में प्राकृतिक खेती विधि को अपनाया।

सुरेश बताते हैं कि उन्हें पहले ही साल इस खेती विधि में चमत्कारिक परिणाम देखने को मिले। सुरेश कहते हैं कि जब कांगड़ा जिला उपायुक्त कार्यालय के बाहर प्राकृतिक खेती उत्पादों का बिक्री केंद्र खुला तो वे भी उसमें अपनी फल सब्जियां भेजते थे। लेकिन कुछ समय के बाद वह किन्हीं कारणों से बंद हो गया। बिक्री केंद्र में आने वाले ग्राहक प्राकृतिक खेती उत्पादों की बहुत सराहना करते थे और आज भी कई ग्राहक मुझे फोन करके मेरे खेत से सब्जियां लेकर जाते हैं। सुरेश कुमार को प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत अपने उत्पादों की बिक्री के लिए कैनोपी दी गई है जिसे वह सड़क किनारे लगाकर प्राकृतिक सब्जियों और फलों को बेचने का काम भी कर रहे हैं।

सुरेश कुमार अपनी पंचायत के साथ अपने आस-पास की पंचायतों में भी प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण देने का काम कर रहे हैं। उन्होंने योजना की सहायता से संसाधन भंडार भी खोला है, जिसमें तैयार आदानों को वे किसानों को दे रहे हैं। सुरेश ने अपने खेतों में प्राकृतिक खेती का जो मॉडल विकसित किया है उसे वह अन्य किसानों को दिखाकर उन्हें भी इस खेती के प्रति प्रेरित कर रहे हैं।

> **"प्राकृतिक खेती के उत्पादों की मार्केट में बहुत मांग है। मैं जब अपने उत्पादों को धर्मशाला बिक्री के लिए ले गया तो वो हाथों-हाथ बिक गए। आज भी लोग मुझे सब्जियों के लिए संपर्क करते हैं।"**

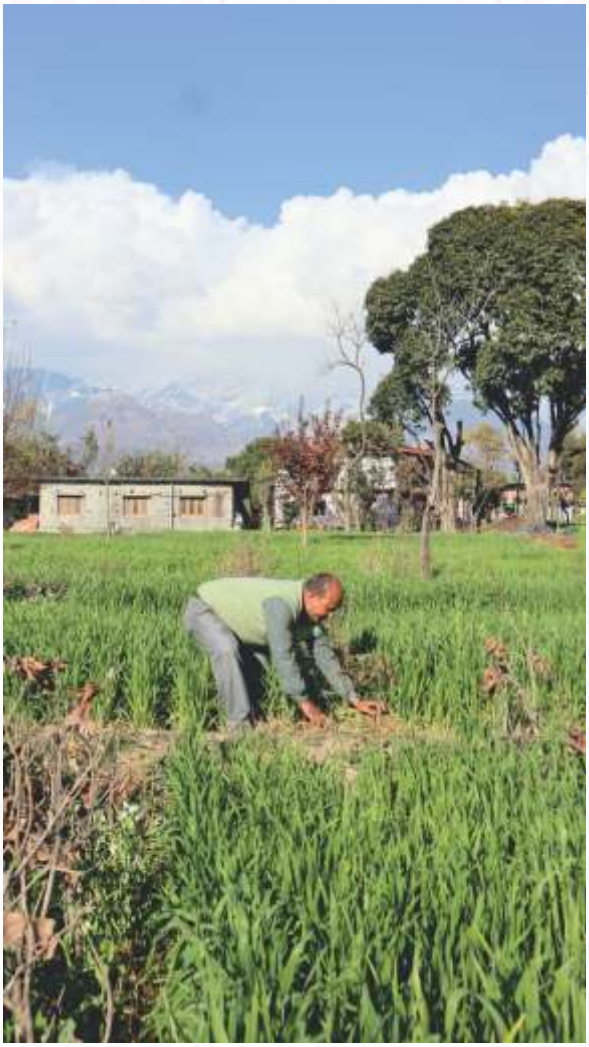

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 15 कनाल (7.5 बीघा) प्राकृतिक खेती में जमीन – 15 कनाल (7.5 बीघा)

फसलें – मटर, गेहूं, धान, मक्की, गोभी, मूली, शलगम, धनिया, पालक व अन्य

रसायनिक खेती – व्यय: 5,000 आय: 30,000

प्राकृतिक खेती – व्यय: 1,000 आय: 65,000

प्रयोग के तौर पर शुरू की प्राकृतिक खेती, खेत बने प्रयोगशाला

विजय कुमार

पिछले एक दशक से खेती कर रहे फतेहपुर विकास खंड के किसान विजय कुमार खेती में बढ़ रही बीमारियों और बढ़ते रसायनों के खर्चे से तंग आ चुके थे तथा खेती को त्यागने का मन बना चुके थे। लेकिन 2018 में विजय को प्राकृतिक खेती के बारे में पता चला और इसके बाद उन्होंने इस खेती विधि के जनक सुभाष पालेकर से प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण पाने के बाद विजय ने इस खेती विधि को प्रयोग के तौर पर अपने बंजर पड़े आधा बीघा के खेत से शुरू किया और आज उनका खेत न सिर्फ गांव के किसानों बल्कि कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए प्रयोगशाला बन गया है।

आधे बीघे से हुई प्राकृतिक खेती की शुरूआत अब 10 बीघा तक पहुंच गई है और विजय कुमार क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षक बनकर उभरे हैं।

विजय कुमार बताते हैं कि उन्होंने मिश्रित खेती के अंतर्गत गेहूं और सह-फसल के तौर पर सरसों और मटर लगाए, जिसके अच्छे परिणाम देखने को मिले। वे कहते हैं कि गेहूं में पीला रतुआ का प्रकोप आया तो इसपर खट्टी लस्सी और जीवामृत के बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले। जिसे देखकर अन्य किसान भी आश्चर्यचकित रह गए।

विजय कहते हैं कि मुझे इस खेती विधि को अपनाए हुए तीन वर्ष से अधिक का समय हो चुका है और मैं अभी तक 500 से अधिक किसानों को इस खेती विधि के बारे में सिखा चुका हूं। उन्होंने बताया कि नौणी स्थित वानिकी विश्वविद्यालय के छात्र भी मेरे 2.5 कनाल (1.25 बीघा) के खेत में इस खेती विधि पर शोध कर रहे हैं।

विजय बताते हैं कि उन्हें अपनी खाद्य फसलों और सब्जियों को बाजार नहीं ले जाना पड़ता है और लोग उनके खेत से ही इन्हें खरीद कर ले जाते हैं। जिससे अपनी सब्जियों को बाजार ले जाने के झंझट से भी छुटकारा मिल गया है।

> **“इस तकनीक में फसलों की उत्पादकता और गुणात्मकता बहुत अच्छी है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस खेती विधि में किसानों की आय दोगुनी होगी और यह उनके सामाजिक व आर्थिक जीवन को बदलने में अहम भूमिका अदा भी करेगी।”**

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 20 कनाल (10 बीघा) प्राकृतिक खेती के अधीन– 10 कनाल (5 बीघा)

मुख्य फसलें– गेंहू, मटर, सरसों, मक्की, माश, सोयाबीन, गोभी, लौकी, ब्रोकली, आलू, कद्दू, खीरा

रसायनिक खेती– व्यय: 9,600 आय: 92,100

प्राकृतिक खेती– व्यय: 7,900 आय: 99,920

प्राकृतिक खेती ने दिलवाई क्षेत्र में पहचान

रिशू कुमारी

शादी से पहले पिता और शादी के बाद ससुराल में पति के नाम से पहचानी जाने वाली महिलाओं के लिए खेती के दम पर अपनी अलग पहचान बना पाना चुनौतिपूर्ण रहता है। लेकिन कांगड़ा के जमानाबाद गांव की रिशू कुमारी के लिए यह चुनौती और बड़ी इसलिए थी क्योंकि उनके ससुर दशकों से खेती से ही घर का भरण पोषण कर रहे थे। ऐसे में रिशू ने प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया और अपने परिवारवालों को इस खेती करने के लिए तैयार किया। परिवार के विरोध के बावजूद प्राकृतिक खेती के लिए जुनून से भरी रिशू ने इस खेती विधि को पहले अपने छोटे से खेत में प्रयोग के तौर पर शुरू किया और अब अपनी पूरी 6 बीघा भूमि पर सफलतापूर्वक कर रही हैं। रिशू बताती हैं कि मेरे पति शिक्षक हैं और उन्होंने भी मुझे खेती के लिए प्रेरित किया और आज मैं अपने पूरे खेतों की देखरेख करती हूँ।

रिशू कुमारी ने बताया कि पहले जब उनका परिवार खेती करता था तो पनीरी बेचते थे, लेकिन अब वे पनीरी के साथ सब्जियों का काम कर रही हैं। उन्होंने बताया कि पहले खर्चा बहुत अधिक आ रहा था लेकिन अब खर्च नाम मात्र का रह गया है। जिससे अब परिवार की आय बढ़ गई है और मेरे परिवार वाले भी इस खेती विधि से बहुत खुश हैं। उन्होंने बताया कि वे अपनी सब्जियों को सड़क किनारे कैनोपी लगाकर बेच रही हैं।

रिशू कुमारी बताती हैं कि जब वे शादी के बाद यहां आई थी तो उन्हें केवल उनके पति के नाम से पहचाना जाता था, लेकिन प्राकृतिक खेती से जुड़ने के बाद उनकी न सिर्फ इलाके में बल्कि जिला के किसानों में विशेष पहचान बनी है। रिशू के खेती मॉडल को देखते हुए अब जिला के अन्य किसान भी उनके खेतों में मॉडल को देखने के लिए आते हैं। इतना ही नहीं रिशू अब अपने पास एक प्रशिक्षु किसान को छह माह के लिए प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण दे रही हैं। वहीं प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत रिशू को तीन पंचायतों में प्राकृतिक खेती के प्रसार की जिम्मेवारी भी दी गई है और वे अभी तक 300 से अधिक किसानों को इस खेती विधि के बारे में प्रशिक्षित कर चुकी हैं।

> **“इस खेती विधि ने मुझे अपनी एक पहचान दिलवाई है और मैं अन्य महिला किसानों को भी इस खेती विधि से जुड़ने और अपनी नई पहचान बनाने के लिए प्रेरित करती हूं।”**

विस्तृत विवरण

कुल जमीन - 12 कनाल (6 बीघा) प्राकृतिक खेती में जमीन - 12 कनाल (6 बीघा)

फसलें - प्याज, लहसुन, मटर, गेहूं, धान, मक्की, गोभी, मूली, शलगम, धनिया, पालक

रसायनिक खेती - व्यय: 20,500 आय: 46,000

प्राकृतिक खेती - व्यय: 5,000 आय: 65,000

SPNF

जहर मुक्त सब्जियां
गाय मूत्र और गाय गोबर से पैदा की
स्वस्थ, पौष्टिक व गुणकारी सब्जियां

2022 तक जहर मुक्त होगा हिमाचल : आचार्य

धर्मशाला में शून्य लागत खेती पर जागरूकता शिविर में बोले राज्यपाल, कहा, नशे से दूर रहने का संकल्प लें युवा

जागरण संवाददाता, धर्मशाला : राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि देवभूमि हिमाचल को 2022 तक जहर मुक्त यानी रसायनिक खेती और नशामुक्त बनाया जाएगा। जहरीली खेती से छुटकारा पाने और किसानों की आय को दोगुना करने के लिए शून्य लागत प्राकृतिक कृषि प्रणाली ही श्रेष्ठ साधन है। राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) कंपनी-5 धर्मशाला व कृषि विभाग द्वारा शून्य लागत प्राकृतिक खेती के तहत जागरूकता शिविर की अध्यक्षता करते हुए आचार्य देवव्रत ने कहा कि सरकार ने प्रदेश में प्राकृतिक खेती परियोजना के तहत किसानों के हित के लिए 25 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया है। रसायनिक व जैविक खेती का पुराना चलन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उचित नहीं है। प्रदेश के 10 लाख किसानों तक शून्य लागत खेती पहुंचेगी व युवाओं को प्रशिक्षित कर हर पंचायत में एक प्रशिक्षक भी तैनात किया जाएगा।

राज्यपाल ने युवाओं से नशे से दूर रहने का आग्रह करते हुए नशामुक्त हिमाचल बनाने का संकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति यदि ठान ले तो नशे के इस पाप को देवभूमि में पनपने से रोकना संभव है। एनसीसी जैसे अनुशासात्मक विंग से जुड़कर युवाओं की सामाजिक जिम्मेदारी और बढ़ जाती है तथा ईमानदारी से तय दिशा में व निर्धारित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करने पर स्थितियों में सकारात्मक बदलाव लाना संभव है। उन्होंने सामाजिक आंदोलन में युवा पीढ़ी को जोड़कर सामाजिक उत्थान के विभिन्न कार्यों में आगे लाने और प्राकृतिक खेती के विचार को जन-जन तक पहुंचाने में योगदान के मकसद से शिविर में बड़ी संख्या में युवा कैडेट्स की मौजूदगी पर एनसीसी ग्रुप कमांडर शिमला ब्रिगेडियर ललित जोशी सहित उनकी पूरी टीम के प्रयासों की सराहना की।

धर्मशाला के इनडोर स्टेडियम में बुधवार को शून्य लागत प्राकृतिक खेती पर आयोजित राज्यपाल की पाठशाला में उपस्थित चार जिलों के एनसीसी कैडेट्स और अन्य (दायें) केड्टस को संबोधित करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत। उन्होंने शून्य लागत खेती का महत्व बताया। ● जागरण

10 लाख किसानों तक पहुंचेगी शून्य लागत खेती

01 प्रशिक्षक हर पंचायत में किया जाएगा नियुक्त

शून्य लागत प्राकृतिक खेती के परियोजना निदेशक राकेश कंवर ने कहा कि परियोजना के तहत हर पंचायत में प्राकृतिक खेती प्रशिक्षक तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके तहत किसानों के लिए दो बड़े प्रशिक्षण शिविर 30 सितंबर से 4 अक्टूबर तक पालमपुर व 12 से 16 अक्टूबर तक शिमला में आयोजित किए जाएंगे।

कार्यक्रम में खाद्य आपूर्ति मंत्री किशन कपूर, उपायुक्त कांगड़ा संदीप कुमार, पुलिस अधीक्षक संतोष पटियाल, एनसीसी कंपनी-5 के सीओ कर्नल डीकेएस चौहान, शून्य लागत प्राकृतिक खेती परियोजना के कार्यकारी निदेशक डॉ. राजेश्वर चंदेल, आतमा परियोजना कांगड़ा की निदेशक डॉ. बिनता सूद, एनसीसी अधिकारी व कांगड़ा, मंडी, हमीरपुर और बिलासपुर जिलों से एनसीसी की तीनों शाखाओं के कैडेट्स ने भाग लिया।

प्राकृतिक खेती अपनाएं किसान

राज्यपाल बोले, किसानों की आय बढ़ाने का है एकमात्र साधन

प्राकृतिक खेती प्रशिक्षक किए जाएंगे तैयार : कंवर

किसानों को शून्य लागत प्राकृतिक खेती पर किया जागरूक

कार्यशाला के दौरान उपस्थित किसान-बागवान व अन्य।

550 पंचायतों के किसान जीरो बजट नेचुरल खेती में ट्रेंड

● ब्लाक व पंचायत स्तर पर पहुंचाई जाएगी जीरो बजट खेती

जहर मुक्त प्राकृतिक खेती करने की दी सलाह

इंदौरा में सुभाष पालेकर ने प्राकृतिक खेती की जानकारी दी

जीरो बजट खेती के लिए देसी गाय भी देगी सरकार

▶ राजस्थान, पंजाब और हरियाणा से मंगवाई जा रही हैं गउएं

शून्य लागत खेती पर किसानों को दिए टिप्स

पालमपुर/इंदौरा/पंचरुखी, 9 सितम्बर (ब्यूरो): शून्य लागत प्राकृतिक खेती पर 15 विकास खंडों के किसानों को कृषि विभाग व आतमा प्रोजैक्ट कांगड़ा द्वारा टिप्स दिए गए। परियोजना की निदेशिका आतमा जिला कांगड़ा बिनता सूद ने किसानों को बताया कि शून्य लागत खेती कैसे किसानों के लिए फायदेमंद है और यह हमारे जीवन में क्यों अति आवश्यक है। कार्यशाला में करीब 1800 किसानों ने शून्य लागत खेती के बारे में जानकारी हासिल की।

इंदौरा में तकनीकी अधिकारी आरूपी व सहायक तकनीकी अधिकारी हितेंद्र जम्वाल, प्रशिक्षक किसान रशपाल गुलेरिया ने किसानों व पंचायतों के पदाधिकारियों को शून्य लागत प्राकृतिक खेती पर आधारित विभिन्न योजनाओं व फसलों तथा अन्य कई तरह के लाभ बारे विस्तृत जानकारियां दी गईं। वहीं पंचरुखी में प्राकृतिक खेती खुशहाल न योजना के अंतर्गत शून्य लागत प्राकृतिक कृषि के ऊपर कार्यशाला में लगभग 150 किसानों पशुपालकों व बागवानों ने भाग लिया। कृषि विकास अधिकारी रजनीश शर्मा आतमा परियोजना से खंड तकनीकी प्रबंधक डा. सोनिया गुप्ता ने इस योजना के घटकों को बनाकर प्रदर्शित किया तथा इनकी वीडियो व फिल्में भी देखीं।

ग्लोबल वार्मिंग में रसायनिक कृषि प्रमुख कारक : देवव्रत

प्राकृतिक कृषि पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में बोले राज्यपाल

प्राकृतिक खेती को जनांदोलन बना रहा परिवार

'स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को दिया प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण'

पालमपुर, 12 दिसम्बर (प्रदीप): आतमा परियोजना विकास खंड भेड़ू महादेव की ओर से ग्राम पंचायत काहनफट्ट के देहरू गांव में प्राकृतिक खेती पर आधारित कृषि शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें आतमा परियोजना की ओर से दिव्या ठाकुर ने भाग लिया और स्वयं सहायता समूह की लगभग 20 सदस्यों को प्राकृतिक खेती करने की पद्धति का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के आरंभ में ही कोरोना से बचाव हेतु सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करने को कहा तथा कुछ लोगों को मास्क भी बांटे गए। मास्टर ट्रेनर ए.एस. पठानिया ने प्रशिक्षण के उपरांत सभी घटक लोगों को तैयार करके दिखाए। इस शिविर के आयोजन में सुरेश राणा उपप्रधान का पूरा योगदान रहा।

पालमपुर : मास्टर ट्रेनर अमर सिंह पठानिया महिलाओं को घटक तैयार कर दिखाते हुए। (प्रदीप)

खेतों को केमिकल और युवाओं को नशा मुक्त बनाना लक्ष्य : राज्यपाल

धर्मशाला में एनसीसी कैडेट्स से आचार्य देवव्रत ने किया सहयोग का आह्वान

आय दोगुना करने के लिए शून्य लागत खेती श्रेष्ठ

2663 ने अपनाई, अब 50 हजार पर नजरें गढ़ाई

रासायनिक-जैविक को छोड़ प्राकृतिक खेती से जुड़ रहे प्रदेश भर के किसान

'किसान स्कूल' में समझाई भोजन में पौष्टिकता की महत्ता

भवारना, ९ अप्रैल (अतुल): आत्मा परियोजना भेडू महादेव ब्लॉक की ओर से गांव हैंजा और सूरी में किसान स्कूल लगाया गया, जिसमें स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को मुख्य फसल के रूप में भिंडी और सह फसल के रूप में फ्रासबीन और खीरे के बीज बांटे गए।

बी.टी.एम. रजनी शर्मा और ए.टी.एम. शीतल सूद ने भोजन में पौष्टिकता का महत्व समझाया और रासायनिक खादों के स्थान पर देसी गाय के गोबर और गौमूत्र से तैयार जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत और फसल सुरक्षा के लिए स्थानीय पौधों से तैयार घटक प्रयोग करने पर बल दिया।

भवारना : प्रशिक्षण देते अमर सिंह पठानिया। (अतुल)

सरकार द्वारा चलाई गई प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना को अपनाने के लिए प्रेरित किया। मास्टर ट्रेनर अमर सिंह पठानिया ने व्यावहारिक सब्जियां उगाने का प्रशिक्षण दिया।

जल्द प्राकृतिक कृषि राज्य बनकर उभरेगा हिमाचल:आचार्य देवव्रत

ग्लोबल वार्मिंग के लिए कृषि क्षेत्र की 40% भागीदारी: पालेकर

पहली जीरो बजट गेहूं तैयार

रेट 50 रुपए किलो

डी.सी. ने किया प्राकृतिक खेती उत्पाद विक्रय केंद्र का शुभारंभ

पालमपुर में किसानों ने साझा किए विचार

पालमपुर। कृषि विभाग की आत्मा संस्था द्वारा जिला के सभी 15 विकास खंडों में शून्य लागत प्राकृतिक खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें लगभग सभी विकास खंडों के 1800 किसानों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं में कृषि विभाग के विशेषज्ञों ने भी किसानों बागवानों को बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी एवं सुझाव साझा किए। शिविर में जिला के जागरूक किसानों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि हमें आज के समय में प्राकृतिक खेती को अपनाना बहुत जरूरी हो गया है। कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से हमारी खेतों की मिट्टी में जो केंचुए नष्ट हो रहे हैं। इसकी वजह से मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी हो गई है। आत्मा परियोजना की निदेशक डॉ. [illegible] सूद ने बताया कि यह कार्यक्रम बहुत सफल रहा है और आने वाले समय में भी ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा।

अगोजर में शून्य लागत खेती की दी जानकारी

A small push to zero budget natural farming in Kangra

Farmers allowed to sell produce at Dharamsala mini-secretariat

LALIT MOHAN

Some farmers in Kangra district have taken up zero-budget natural farming under the aegis of the Agriculture Department. The district administration has allowed them to sell produce at the mini-secretariat at Dharamsala to promote the farming technique.

Seema Kumari, a farmer from Bali village near Dharamsala, has adopted zero budget natural farming and comes to the town every Saturday to sell vegetables she grows on about 2 kanals. She says that her vegetables sell quickly at the mini-secretariat. "I come around 10 am and manage to sell the entire produce by afternoon. People are showing keen interest in my produce, as it is free of chemical fertiliser or pesticides. The Agriculture Department has put up banners and posters to attract customers to my stall".

Farmers sell vegetables produced through zero budget natural farming at the mini-secretariat at Dharamsala. PHOTO: KAMAL JOSHI

Making good income

Suresh Kumar, a farmer from Trembdu village, says that he started coming to Dharamsala to sell his produce about five weeks ago. "We are selling our produce at the market price and making a good income, as our input cost is almost zero," he adds.

Suresh is also a master trainer of zero budget natural farming and goes to different villages to teach people about the technique. The Agriculture Department pays him Rs 1,000 for every training and awareness programme he organises, he says.

Support of ex-Governor

Former Governor Acharya Devvrat had given a push to this farming method. He aggressively lobbied with the state government, which kept a budget of Rs 25 crore for promoting the technique. The budget was mainly spent on organising seminars and awareness programmes.

Chemical-free agriculture

Zero budget natural farming is a method of chemical-free agriculture drawn from traditional Indian practices.

Maharashtra farmer and Padma Shri recipient Subhash Palekar had developed the technique in mid-1990s as an alternative to the Green Revolution methods that were driven by chemical fertilisers and pesticides and intensive irrigation. He argued that the rising cost of external inputs was a leading cause of indebtedness and suicides among farmers, while the impact of chemicals on the environment and the long-term fertility of soil was devastating. Without the need to spend money on these inputs or take loan to buy them, the cost of production could be reduced and farming made a 'zero-budget' exercise, he said.

Experts oppose technique

Many modern agriculture experts have resisted the technique. They say it cannot cater to the food security needs of the country in view of increasing population.

Better yields possible

The Palampur Agriculture University of Himachal has scientifically established that zero budget natural farming can provide a better yield than organic or chemical farming. AK Sarial, Vice-Chancellor, says with the funds provided by the government, the university has developed a farm on its campus to test the natural farming models developed by Subhash Palekar.

Good results in veggies

Sarial says that the results of zero-budget natural farming have been more encouraging in vegetable crops. In the university farm, scientists have been able to produce 105 quintals of radish per hectare against 80 quintals produced under organic farming — a 31 per cent increase, which is very encouraging. Increase in the production of broccoli, cauliflower, cabbage, kale, Chinese cabbage and pea has also been registered with the help of this technique, he adds.

Farm experts say that since farming in Himachal is done at a small scale as compared to in plains, farmers can adopt this method and sell their chemical fertiliser and pesticide-free produce. However, farmers will need government support for marketing their produce, they add.

ग्लोबल वार्मिंग से बचाएगी प्राकृतिक खेती

कृषि विश्वविद्यालय में राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने किया प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन

रासायनिक खेती से हो रहे कैंसर मधुमेह जैसे घातक रोग : पालेकर

पालमपुर में पांच से दस जून तक प्राकृतिक खेती पर चलेगा विशेष शिविर

प्राकृतिक खेती के लाभ बताए

सुलह : अरला में एक दिवसीय कृषि प्रशिक्षण शिविर में भाग लेते किसान। (स.ह.)

सुलह, १९ नवम्बर (स.ह.): मंगलवार को विकास खंड भवारना की पंचायत अरला में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कृषि प्रसार अधिकारी डा. शशि पाल अत्री, मनीषा राणा, नेहा ठाकुर ब्लॉक तकनीकी प्रबंधक द्वारा अरला पंचायत के लगभग 55 किसानों को प्राकृतिक खेती करने के तरीके एवं उनके लाभ के बारे में जानकारी दी। वहीं डा. अत्री ने मुख्यमंत्री बाड़बंदी योजना के तहत लोगों को बाड़ लगाने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान शिविर में पंचायत प्रधान नरेंद्र ठाकुर, उपप्रधान ओम प्रकाश, बिमला देवी, मन बहादुर व अरविंद समकड़िया सहित किसान उपस्थित रहे।

जिला आतमा अधिकारी

डॉ. शशी पाल अत्री
जिला परियोजना निदेशक (आतमा)

कांगड़ा हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है और यहां के किसान बड़ी तेजी से प्राकृतिक खेती विधि से जुड़ रहे हैं। मैंने जिला के सभी विकास खंडों में स्वयं दौरा किया है और इस दौरान मैंने पाया कि किसान इस खेती विधि को लेकर उत्साहित हैं। हमारी टीम किसानों को छोटे-छोटे समूहों में प्रशिक्षण देकर उन्हें इस खेती विधि से जोड़ रही हैं।

डॉ. दिनेश राणा
जिला परियोजना उप-निदेशक-।। (आतमा)

किसानों को प्राकृतिक खेती विधि से जोड़ने के लिए हम हर साल तय लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। हमने सभी बीटीएम/एटीएम में पंचायतों का बंटवारा किया है। साथ ही हमने पंचायत स्तर पर ट्रेनर फार्मर्स की जिम्मेवारियां तय की हैं इससे प्राकृतिक खेती के प्रसार में तेजी आई है।

डॉ. अमित शर्मा
जिला परियोजना उप-निदेशक-। (आतमा)

रोहित संग्राए
कंप्यूटर प्रोग्रामर

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

बैजनाथ

नितिका (बीटीएम)

ज्योतिका राणा (एटीएम)

सचिन शर्मा (एटीएम)

पंचरूखी

सोनिका गुप्ता (बीटीएम)

दिव्या शर्मा (एटीएम)

प्रतिभा परिहार (एटीएम)

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

भवारना

नेहा (बीटीएम)

स्वेता (एटीएम)

लोकेश कुमार (एटीएम)

लम्बागांव

दिव्या शर्मा (बीटीएम)

आशिता छेरिंग (एटीएम)

दिनेश (एटीएम)

भेडू–महादेव

रजनी शर्मा (बीटीएम)

शीतल सूद (एटीएम)

रोनित ठाकुर (एटीएम)

नगरोटा बगवां

प्रियंका (बीटीएम)

मुरारी लाल (एटीएम)

शिवांशु मेहता (एटीएम)

कांगड़ा

पल्लवी सूद (बीटीएम)

प्रिया ठाकुर (एटीएम)

शानू ठाकुर (एटीएम)

रैत

हरीश कुमार (बीटीएम)

सोनाली शर्मा (एटीएम)

नीतिका सूद (एटीएम)

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

परागपुर

पूजा राणा (बीटीएम)

कंचन दत्ता (एटीएम)

अनु चौधरी (एटीएम)

देहरा

डिंपल ठाकुर (बीटीएम)

दीपक ठाकुर (एटीएम)

रवि चौधरी (एटीएम)

नगरोटा सूरियां

विजय कुमार (बीटीएम)

लक्की कश्यप (एटीएम)

आरूषी (एटीएम)

इन्दौरा

सपना (बीटीएम)

विकास चौधरी (एटीएम)

अरूण कल्याण (एटीएम)

नूरपुर

विनय सिंह (बीटीएम)

मुनीश (एटीएम)

हरजीत सिंह (एटीएम)

धर्मशाला

चंदन कुमार (बीटीएम)

शैलजा चंदेल (एटीएम)

शिखा शर्मा (एटीएम)

फतेहपुर

सागर सिंह (बीटीएम)

प्रियंका कुमारी (एटीएम)

विशाल (एटीएम)

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अधीन नवीन प्रयास

- **प्राकृतिक खेती आधारित सतत् खाद्य प्रणाली – Sustainable Food Systems Platform for Natural Farming (SUSPNF)** – 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' की ओर से भविष्य की मांग एवं मूल्य की श्रृंखला को देखते हुए एक नवोन्वेषी सतत् खाद्य प्रणाली का निर्माण किया जा रहा है। यह प्रणाली किसान एवं उपभोक्ता के बीच परस्पर विश्वास को कायम रखते हुए पारदर्शिता एवं उचित मूल्य के सिद्धांत का भी पालन करेगी। यह प्रणाली तकनीक एवं आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करते हुए मांग एवं आपूर्ति की निरंतरता को कायम रखेगी।
- **नवोन्वेषी स्व–प्रमाणीकरण प्रणाली – Farmer's Self-Declared Certified Evaluation** – योजना के अधीन दुनियाभर में मान्य राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करने वाली एक अनूठी स्व–प्रमाणीकरण प्रणाली तैयार की जा रही है जो किसान एवं उपभोक्ता के बीच पारदर्शिता एवं ट्रेसेबिलिटी सुनिश्चित करेगी। इस प्रमाणीकरण से बाजार में उत्पाद बेच रहे प्राकृतिक खेती किसान की आसानी से पहचान की जा सकेगी।
- **पारंपरिक फसलों का बीज उत्पादन – Traditional Seed Production Programme** – प्राकृतिक खेती की सफलता को देखते हुए अब इस विधि से उगाई विविध फसलों के बीज की मांग बढ़ी है। किसानों को उच्च गुणवत्ता का बीज सुनिश्चित करने के लिए 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' एक विस्तृत कार्ययोजना बनाकर काम कर रही है। प्राकृतिक खेती पद्धति से बीजोत्पादन करने पर पारिस्थितिकी एवं किसानों की आर्थिक सुरक्षा होगी और उन्हें आय वृद्धि का अतिरिक्त विकल्प भी मिलेगा।
- **प्राकृतिक खेती उत्पाद की मार्केटिंग के लिए कैनोपी – Canopy For Marketing Of Natural Farming Produce** – प्राकृतिक खेती उत्पाद की मार्केटिंग की समस्या को हल करने की दिशा में कार्य करते हुए 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने एक कैनोपी का प्रारूप तय कर इसे प्रदेश के 50 किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान पर आबंटित किया है। यह कैनोपी प्राकृतिक खेती किसान एवं उसके उत्पाद की अलग पहचान बनाने में सहायक होंगी। इस कैनोपी को अन्य किसानों को भी जरूरत के हिसाब से दिया जा रहा है।
- **किसान–उत्पाद कंपनियां – Farmer Producer Companies** – योजना के अधीन प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों के लिए किसान–उत्पाद कंपनियां बनाने का काम किया जा रहा है। किसानों का समूह बनाकर छोटे–छोटे किसान उत्पाद संघ बनाकर इन्हें तकनीक, विपणन, खाद्य प्रसंस्करण और आदान निर्माण के लिए सहायता करने के साथ इन कंपनियों को एक राज्य स्तरीय फेडरेशन के तहत लाया जा रहा है।
- **प्राकृतिक खेती उत्पाद के लिए मंडियों में स्थान और आउटलेट – Outlets For Natural Farming Produce** – उपभोक्ता को स्वस्थ एवं रसायनरहित उत्पाद उपलब्ध करवाने के लिए पायलट आधार पर शिमला शहर में एक आउटलेट खोला जा रहा है। इसे साल के 365 दिन संचालित किया जाएगा और विभिन्न प्राकृतिक उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी। इसके अलावा प्राकृतिक खेती उत्पादों के लिए एचपीएमसी की दो समर्पित मंडियों के साथ अन्य 10 मंडियों में भी अलग से स्थान दिया गया है।

Comparative Economics of SPNF and CF Apple in HP (Rs/ha)

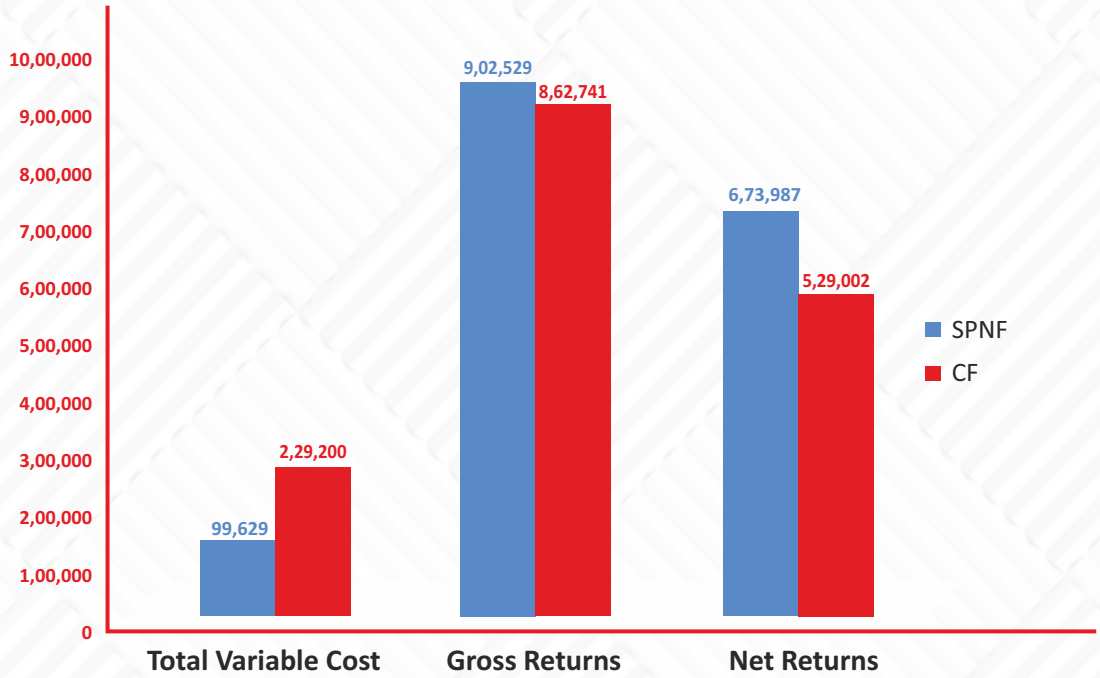

* अभी तक किए गए विभागीय तुलनात्मक अध्ययन में प्राकृतिक खेती से गैर – प्राकृतिक खेती की तुलना में बागवानी लागत में कमी दर्ज की गई है। प्राकृतिक खेती पद्धति से बागवानों का शुद्ध लाभ बढ़ा है।

Comparative disease incidence in SPNF & CF Apple in Shimla, Sirmour District during 2020

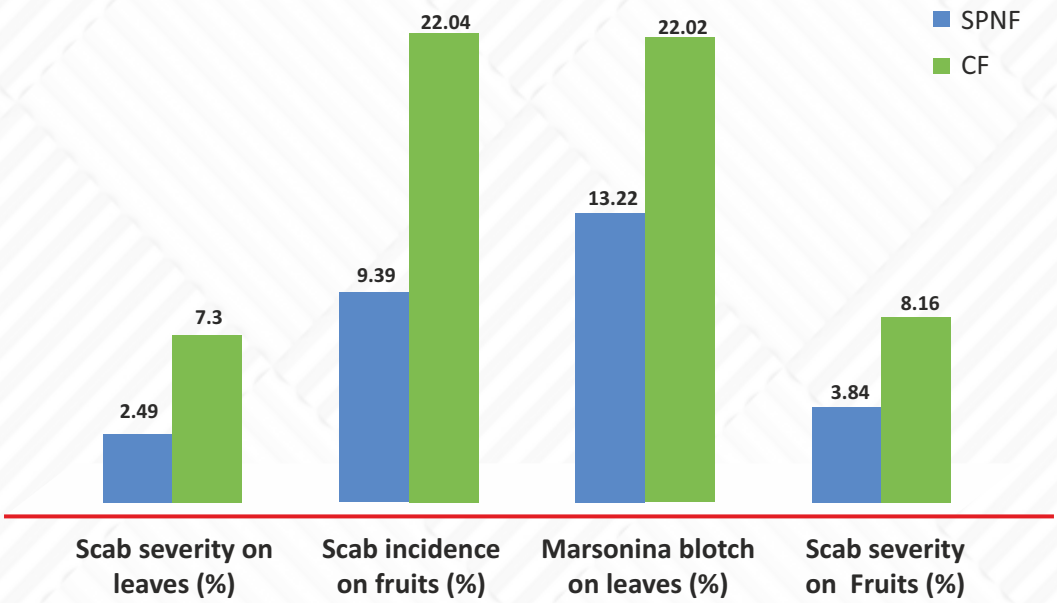

* अभी तक किए गए विभागीय तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया है कि प्राकृतिक खेती बागीचों में गैर – प्राकृतिक खेती बागीचों की अपेक्षा सेब पपड़ी रोग (Scab) और आकस्मिक पतझड़ रोग (Premature Leaf Fall) का प्रकोप कम दर्ज किया गया है।

प्राकृतिक खेती पर किये गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों के निष्कर्ष

- इस विधि से **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** गतिविधियों को बढ़ावा मिलता सिद्ध हुआ है। यह **एंजाइम** सीधे मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। 'रासायनिक' और 'जैविक खेती' की तुलना में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** की गतिविधि (DHA) उच्चतम (8.4 µg TPFg^{-1} h^{-1}) दर्ज की गई, यानि मिट्टी की गुणवत्ता फसल उत्पादन के बाद बढ़ती प्रतीत हुई है।

- इसके अलावा, **क्षारीय फॉस्फेटेज** और **अम्लीय फॉस्फेटेज** जैसी अन्य **एंजाइम** गतिविधियों को भी 'प्राकृतिक खेती' के तहत 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' से अधिकतम (112 µg TPFg^{-1} h^{-1}) दर्ज किया गया। अतः **SPNF** प्रणाली 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले में बढ़ी हुई **एंजाइम** गतिविधियों द्वारा मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार करने हेतु अधिक कारगर सिद्ध हुई है।

- **SPNF** प्रणाली में देसी केंचुओं की आबादी में भी अधिक वृद्धि देखी गई। 'प्राकृतिक खेती' के तहत विभिन्न उच्च घनत्व वाले सेब के बागानों में, केंचुओं की आबादी उच्चतम दर्ज की गई जो मिट्टी के 0-15 सेमी गहराई में 32 केंचुआ / फीट^2 थी। ये केंचुआ प्रजाति, मिट्टी के स्वास्थ्य और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मृदा को **नाइट्रोजन, फास्फोरस** और **पोटेशियम** आदि जैसे कई पोषक तत्वों द्वारा समृद्ध बनाते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** में प्रमुख रूप से बैक्टीरिया, एंजाइम, पौधे के अपघटित अवशेष, केंचुआ कुकुन, पशुओं एवं अन्य जीवों के अपशिष्ट इत्यादि जैविक मिश्रण के रूप में विद्यमान होते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** आसानी से उपलब्ध पानी में घुलनशील पौधे पोषक तत्वों का बहुत समृद्ध स्रोत हैं, जो कि उपरी मिट्टी सतह में सामान्य रूप में मौजूद ह्यूमस (Humus) की तुलना में अधिक होते हैं।

- प्रदेश के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में यह खेती विधि मिट्टी में नमी की मात्रा, 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले 1.5-7.9% अधिक बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है। **SPNF** खेती के तहत किए गए एक शोध में मटर-टमाटर की फसल उत्पादन के एक साल उपरान्त मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में 329 कि.ग्रा./है० से 358 कि.ग्रा./है० की वृद्धि दर्ज की गई।

जिला स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

क्रम संख्या	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
1	डॉ. शशि पाल अत्री	जिला परियोजना निदेशक	701843 1069		814
2	डॉ. दिनेश राणा	जिला परियोजना उप-निदेशक-II	9418008046	413	
3	डॉ. अमित शर्मा	जिला परियोजना उप-निदेशक-I	9418478271	401	

खण्ड-स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

विकास खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें / एम.सी. वार्ड
बैजनाथ	नितिका	बीटीएम	8894070831	16	50
	ज्योतिका राणा	एटीएम	8894070831	17	
	सचिन शर्मा	एटीएम	8219096990	17	
पंचरूखी	सोनिका गुप्ता	बीटीएम	8219241596	16	35 पंचायत 5 एम. सी. वार्ड
	दिव्या शर्मा	एटीएम	8628029729	17	
	प्रतिभा परिहार	एटीएम	973 63 43 151	17	
भवारना	नेहा	बीटीएम	8894001720	17	42 पंचायत 9 एम. सी. वार्ड
	स्वेता	एटीएम	9882910164	17	
	लोकेश कुमार	एटीएम	8219293 53 6	17	
लम्बागांव	दिव्या शर्मा	बीटीएम	9805683 824	13	49
	आशिता छेरिंग	एटीएम	701813 2988	18	
	दिनेश	एटीएम	8626992780	18	
भेडू-महादेव	रजनी शर्मा	बीटीएम	9805628600	20	66
	शीतल सूद	एटीएम	8226874357	23	
	रोनित ठाकुर	एटीएम	83 51843 562	23	
नगरोटा बगवां	प्रियंका	बीटीएम	9816660968	15	47
	मुरारी लाल	एटीएम	9816645728	16	
	शिवांशु मेहता	एटीएम	9418010613	16	

विकास खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें / एम.सी. वार्ड
कांगड़ा	पल्लवी सूद प्रिया ठाकुर शानू ठाकुर	बीटीएम एटीएम एटीएम	94183 60997 9882653 778	18 18 18	54
रैत	हरीश कुमार सोनाली शर्मा नीतिका सूद	बीटीएम एटीएम एटीएम	89883 3 0014 7018649052 7018949807	19 21 21	61
परागपुर	पूजा राणा कंचन दत्ता अनु चौधरी	बीटीएम एटीएम एटीएम	854473 53 49 858093 9460 8626860162	25 27 27	79
देहरा	डिंपल ठाकुर दीपक ठाकुर रवि चौधरी	बीटीएम एटीएम एटीएम	9805761888 8894027479 8278788909	26 26 27	79
नगरोटा सूरियां	विजय कुमार लक्की कश्यप आरूषी	बीटीएम एटीएम एटीएम	8979666162 89883 3 0428 7973 892625	19 18 18	55
इन्दौरा	सपना विकास चौधरी अरूण कल्याण	बीटीएम एटीएम एटीएम	7888771099 98057473 97 94597803 40	15 19 19	53
नूरपुर	विनय सिंह मुनीश हरजीत सिंह	बीटीएम एटीएम एटीएम	7807240342 8544728830 78073 91420	17 17 17	51
धर्मशाला	चंदन कुमार शैलजा चंदेल शिखा शर्मा	बीटीएम एटीएम एटीएम	9882100742 7009202296 8091765585	11 12 12	27 पंचायत 8 एम. सी. वार्ड
फतेहपुर	सागर सिंह प्रियंका कुमारी विशाल	बीटीएम एटीएम एटीएम	9816067123 7807177687 82196503 65	20 23 23	66

Himachal Pradesh

facebook.com/SPNFHP
twitter.com/spnfhp
youtube.com/SPNFHP

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई

कृषि भवन, शिमला–5 हि.प्र. | दूरभाषः 0177 2830767
ईमेलः spnf-hp@gov.in

Designed by : Fringe Media PR Pvt. Ltd.